सुसमाचार

अध्याय 4

लूका रचित सुसमाचार

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय.....1
पृष्ठभूमि.....1
लेखक.....1
पारम्परिक विचार.....2
व्यक्तिगत इतिहास.....4
मूल पाठक.....6
थियुफिलुस.....7
विशाल पाठक.....8
अवसर.....8
तिथि.....8
उद्देश्य.....9
संरचना एवं विषय-सूची.....10
यीशु की शुरूआतें.....10
जन्म की घोषणाएँ.....10
जन्म और बचपन.....11
यूहन्ना द्वारा यीशु की पहचान.....13
परमेश्वर के पुत्र के रूप में पुष्टियाँ.....14
गलील में यीशु की सेवकाई.....15
नासरत में प्रचार.....16
उपदेश और चमत्कार.....16
यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला.....18
उपदेश और चमत्कार.....18
बारह प्रेरितों की तैयारी.....19
यीशु की यरूशलेम यात्रा.....19
शिष्यता की प्रकृति.....20
बढ़ता हुआ संघर्ष.....22
शिष्यता का मूल्य.....23
यीशु का समर्पण.....23
यरूशलेम और उसके आस-पास यीशु की सेवकाई.....24
यीशु की क्रूस की मृत्यु और पुनरूत्थान.....25
गिरफ्तारी, मुकद्दमा, और मृत्यु.....26

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण 28

मुख्य विषय 28

उद्धार का वर्णन 29

उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर 31

परमेश्वर की सामर्थ 31

परमेश्वर की योजना 32

परमेश्वर का पुत्र 32

उद्धार पाने वाले लोग 33

उपसंहार 36

सुसमाचार

अध्याय चार

लूका रचित सुसमाचार

परिचय

कुछ वर्ष पूर्व यह समाचार आया कि लोगों का एक समूह एक जलते हुए कार्यालय भवन में फँस गया। तब एक युवक तेजी से कमरे में आया और उसकी आवाज के सहारे वे सब सुरक्षित बाहर निकल गए। पूरे भवन में सुरक्षित बचे हुए बहुत से लोगों ने यह बताया कि वह एक स्वैच्छिक दमकलकर्मी था जो उस भवन में कार्य करता था। यद्यपि आग में उसने स्वयं का जीवन खो दिया परन्तु उसने दूसरे बहुत से लोगों को निश्चित मृत्यु से बचा लिया।

किसी भी अन्य सुसमाचार लेखक से बढ़कर लूका ने यीशु का वर्णन बचाने वाले के रूप में किया है। चाहे हमें यह अहसास हो या नहीं परन्तु मानवता, सहायता या आशा के बिना खो गई है और हताश है। हमारे पास परमेश्वर के न्याय के खतरे से बचने का कोई मार्ग नहीं है। परन्तु लूका का सुसमाचार हमें याद दिलाता है कि अपने स्वयं के जीवन के मूल्य पर यीशु हमें बचाने के लिए आया।

यह सुसमाचार की हमारी श्रृंखला का चौथा अध्याय है जिसका शीर्षक हमने "लूका रचित सुसमाचार" रखा है। इस अध्याय में हम देखेंगे कि हम नए नियम के तीसरे सुसमाचार को गहरी समझ के लिए कैसे पढ़ सकते हैं और कैसे उसकी शिक्षाओं को हमारे जीवन में लागू कर सकते हैं।

हम लूका के सुसमाचार को तीन चरणों में देखेंगे। पहला, हम लूका के सुसमाचार की पृष्ठभूमि पर विचार करेंगे। दूसरा, हम उसकी संरचना और विषय-सूची को देखेंगे। और तीसरा, हम उसके कुछ प्रमुख विषयों को देखेंगे। आइए हम लूका के सुसमाचार की पृष्ठभूमि से आरम्भ करते हैं।

पृष्ठभूमि

हम लूका के सुसमाचार के लेखक, उसके मूल पाठकों और उसके लेखन के अवसर या परिस्थितियों पर विचार करने के द्वारा उसकी पृष्ठभूमि को देखेंगे। आइए पहले हम उसके लेखक को देखते हैं।

लेखक

आरम्भ से ही हमें यह बताना चाहिए कि लूका को दो संस्करणों वाली रचना का पहला संस्करण माना जाता है। दूसरा संस्करण प्रेरितों के काम की पुस्तक है। और इस कारण, लूका के लेखन से संबंधित प्रश्न प्रेरितों के काम के लेखन से संबंधित प्रश्नों से जुड़े हैं। लूका 1:1-4 में लूका के सुसमाचार की प्रस्तावना को सुनें :

> इसलिए कि बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्हों ने जो पहले ही से इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुँचाया। इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूँ। कि तू यह जान ले, कि ये बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं। (लूका 1:1-4)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और इसकी तुलना प्रेरितों के काम 1:1-2 की समान प्रस्तावना से कीजिए जो इस प्रकार है :

> हे थियुफिलुस, मैं ने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी, जो यीशु ने आरम्भ में किया और स्वर्ग पर उठाए जाने तक करता और सिखाता रहा। (प्रेरितों के काम 1:1-2)

ये दोनों प्रस्तावनाएँ संकेत देती हैं कि लेखक ने थियुफिलुस नामक किसी व्यक्ति को लिखा है। और प्रेरितों के काम की प्रस्तावना पहली पुस्तक का उल्लेख करती है। इस कारण अधिकाँश विद्वानों का यह निष्कर्ष है कि पहली पुस्तक लूका का सुसमाचार थी।

इसका एक और प्रमाण भी है कि एक ही व्यक्ति ने इन दोनों पुस्तकों को लिखा है। लूका की यूनानी भाषा की शैली प्रेरितों के काम की यूनानी भाषा के समान है परन्तु अन्य सुसमाचारों से अत्यधिक भिन्न है। दोनों पुस्तकें समान विषयों पर भी बल देती हैं जैसे, सुसमाचार की सार्वभौमिक प्रस्तुति, पवित्र आत्मा का कार्य, परमेश्वर के वचन और उसकी इच्छा की प्रबल सामर्थ, और "उद्धार" के रूप में मसीह के कार्य का बारम्बार वर्णन। अतः, यदि हम यह अनुमान लगाते हैं कि एक ही लेखक ने दोनों पुस्तकों को लिखा है तो वह कौन था?

हम तीसरे सुसमाचार के लेखन का अध्ययन दो चरणों में करेंगे। पहले हम पारम्परिक विचार को देखेंगे कि यह सुसमाचार लूका नामक एक व्यक्ति द्वारा लिखा गया था। और दूसरा, हम लूका के व्यक्तिगत इतिहास को देखेंगे। आइए पहले हम इस पारम्परिक विचार को देखते हैं कि लूका ने इस सुसमाचार को लिखा था।

पारम्परिक विचार

लूका का सुसमाचार तकनीकी रूप से अज्ञात व्यक्ति द्वारा लिखित है क्योंकि इसमें लेखक का नाम नहीं बताया गया है। परन्तु यह आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए। थियुफिलुस निश्चित रूप से इसे लिखने वाले को जानता था और इसलिए लेखक को अपनी पहचान बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी। परन्तु, लेखक की पहचान के बारे में सूचनाओं के कई स्रोत हैं।

कम से कम तीन प्रकार के प्रमाण पारम्परिक विचार की पुष्टि करते हैं कि लूका ने तीसरे सुसमाचार को लिखा है। पहला, नए नियम के अन्य भागों की टिप्पणियाँ लूका के लेखक होने की ओर संकेत करती हैं।

नया नियम यह संकेत देता है कि तीसरे सुसमाचार का लेखक पौलुस की सेवकाई के अन्तिम वर्षों में उसके साथ था। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक में लेखक कई बार कहानी को अन्य पुरूष "वे" में बताता है और कई बार प्रथम पुरूष "हम" में। प्रथम पुरूष में बताई गई अन्तिम कहानी प्रेरितों के काम 27:1-28:16 में है जिसमें पौलुस की रोम यात्रा के बारे में बताया गया है।

इसके अतिरिक्त, पौलुस की पत्रियाँ यह संकेत देती हैं कि लूका उन कुछ सेवकों में से एक था जो इस समय के दौरान उसके साथ थे। उदाहरण के लिए, 2 तिमुथियुस 4:11 में जब पौलुस की मृत्यु का समय निकट आ रहा था तो पौलुस ने तिमुथियुस से कहा, "केवल लूका मेरे साथ है।" ऐसी जानकारी यह साबित नहीं करती कि तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक को लूका ने लिखा है परन्तु इससे उसकी संभावना को बल मिलता है।

दूसरा, लूका के सुसमाचार के आरम्भिक हस्तलेख भी लूका के लेखक होने की ओर संकेत करते हैं।

> आरम्भिक हस्तलेखों की तिथि का निर्धारण करना वास्तव में एक उच्च तकनीकी विज्ञान है और विद्वान एक प्राचीन हस्तलेख की तिथि का निर्धारण करने के लिए

> प्रमाण के तीन टुकड़ों का प्रयोग करते हैं। पहला और सर्वाधिक महत्वपूर्ण, - यह कई बार विद्यार्थियों को चौंका देता है - परन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण 'पेलियोग्राफी' है। 'पेलियोग्राफी' प्राचीन हस्तलिपि को बताती है; "पेलियो" पुराना और "ग्राफी" लेखन है; अतः प्राचीन लेखन। प्राचीन हस्तलिपि के विद्वान, अर्थात् विशेषज्ञ कुछ ही समय में यह बता सकते हैं कि कुछ दशकों या निश्चित रूप से पचास वर्षों के समय में एक अभिलेख को कब लिखा गया है क्योंकि किसी भी भाषा के लिखने में समय व्यतीत होने के साथ परिवर्तन आता है। कई बार अक्षर बदल जाते हैं या अक्षरों को लिखने का तरीका बदल जाता है; यह प्राचीन हस्तलिपि का अध्ययन है। दूसरा रासायनिक विश्लेषण होता है। उदाहरण के लिए कार्बन 14 डेटिंग या अन्य प्रकार की जांचें हैं जिनमें तिथि का निर्धारण करने के लिए स्याही या उस सामग्री को जाँचा जाता है जिस पर अभिलेख लिखा गया है। हस्तलेख की तिथि को निर्धारित करने का तीसरा माध्यम उसके बारे में की गई कोई बाहरी टिप्पणी या कथन है। उनकी प्रतिलिपि बनाने वाले शास्त्री यदा-कदा ही उन पर तिथि लिखते थे, परन्तु कई बार वे किसी प्रकार का निशान या कोई टिप्पणी देते थे जिससे हमें यह पहचान करने में सहायता मिलती है कि उस अभिलेख की प्रतिलिपि कब बनाई गई थी। अतः, हस्तलेखों की तिथि का निर्धारण करने के ये तीन प्रकार हैं।
>
> डॉ. मार्क स्ट्रॉस

लूका के सुसमाचार के सर्वाधिक विश्वसनीय प्राचीन हस्तलेखों में से एक चर्मपत्र संख्या 75 है जिसे प्रायः "पी-75" कहा जाता है। इस हस्तलेख की तिथि सन् 180 के लगभग है। इसमें अन्य प्राचीन हस्तलेखों की तुलना में तीसरे सुसमाचार का कहीं अधिक भाग शामिल है और इसमें "लूका रचित" शीर्षक दिया गया है।

अन्य बहुत-से प्राचीन हस्तलेख भी लूका के इस सुसमाचार के लेखक के रूप में पहचान करते हैं और कोई भी प्राचीन हस्तलेख इसका श्रेय किसी अन्य व्यक्ति को नहीं देता है। तीसरा, आरम्भिक कलीसिया की रचनाएँ भी लेखक के रूप में लूका की पहचान करती हैं।

आरम्भिक कलीसिया के महत्वपूर्ण अभिलेख तीसरे सुसमाचार के लेखन को निरन्तर लूका से जोड़ते हैं। सन् 170 से 180 के आस-पास की तिथि का मुराटोरियन चर्मपत्र आरम्भिक कलीसिया द्वारा कैनन में शामिल मानी जानी वाली नए नियम की पुस्तकों की सूची देने वाला प्राचीनतम ज्ञात अभिलेख है और यह स्पष्टतः लूका के तीसरे सुसमाचार के लेखक होने की पुष्टि करता है।

एक और प्राचीन गवाह लूका के सुसमाचार की मार्शियन-विरोधी प्रस्तावना है जिसे झूठे शिक्षक मार्शियन का खण्डन करने के लिए सन् 160-180 के बीच लिखा गया था। उसमें तीसरे सुसमाचार का परिचय इस प्रकार दिया गया है :

> सीरिया के अन्ताकिया का निवासी, पेशे से वैद्य, लूका प्रेरितों का एक शिष्य था। बाद में वह पौलुस के साथ हो लिया... लूका ने पवित्र आत्मा की अगुवाई में अपने सम्पूर्ण सुसमाचार को अखाया के क्षेत्र में लिखा।

इसके अतिरिक्त, दूसरी और तीसरी सदियों के बहुत से कलीसियाई अगुवों ने तीसरे सुसमाचार के लेखक के रूप में लूका की पहचान की है। उदाहरण के लिए, सन् 130-202 के दौरान जीवित रहे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आइरेनियस; सन् 150-215 के दौरान जीवित रहे सिकन्दरिया के क्लेमेन्ट; और सन् 155-230 के दौरान जीवित रहे तर्तुलियन ने लूका के लेखक होने का दावा किया।

> मेरे विचार में हम यह विश्वास कर सकते हैं कि लूका ही तीसरे सुसमाचार का लेखक है। प्रेरितों के काम की पुस्तक से हमें पता चलता है कि लूका वास्तव में एक वैद्य था जिससे पौलुस एशिया माइनर से आते हुए त्रोआस नामक स्थान पर मिलता है। वह लूका से मिलता है और वे एक साथ फिलिप्पी जाते हैं और संभवतः लूका एक वैद्य के रूप में फिलिप्पी में ही रहता है और फिर बाद में सन् 57 में फिलिप्पी से यरूशलेम की यात्रा में वह पौलुस के साथ जाता है। अतः नए नियम में हमें लूका के बारे में यह संकेत मिलता है कि वह पौलुस को अच्छी तरह से जानता है, उसके साथ यात्रा करता है और इस बात के भी प्रमाण हैं कि लूका वह व्यक्ति है जो लूका के सुसमाचार को लिखता है।
>
> डॉ. पीटर वॉकर

> यदि आप केवल पौलुस के साथी के नाम का अनुमान लगाना चाहते हैं तो आप संभवतः लूका का नाम नहीं लेंगे। पौलुस की पत्रियों में वह एक प्रमुख पात्र नहीं है। आप संभवतः तीतुस या किसी अन्य व्यक्ति का नाम लेंगे। अतः, पौलुस की पत्रियों में उसके मुख्य पात्र न होने का तथ्य ही यह संकेत देता है कि लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक दोनों के लेखन को उससे जोड़ने के सही होने की संभावना है। परन्तु मेरे विचार में यह सोचने का एक कारण यह भी है कि सुसमाचारों का श्रेय जिन व्यक्तियों को दिया गया है वे उस आरम्भिक समय से संबंधित हैं जब सुसमाचारों का पहली बार प्रसार हो रहा था। अतः, मेरे विचार में दोनों पुस्तकों को लूका से जोड़ने और उसी को प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस के साथी के रूप में प्रकट होने का तथ्य इस संभावना को बल देता है कि दोनों को लूका ने लिखा है जो पौलुस की कुछ यात्राओं में उसके साथ था और उसके सहयोगियों में से एक था।
>
> डॉ. रिचर्ड बॉखम

लूका के इस सुसमाचार के लेखक होने के पारम्परिक विचार की पुष्टि के बाद आइए हम लूका के व्यक्तिगत इतिहास को देखते हैं।

व्यक्तिगत इतिहास

नया नियम हमें लूका के व्यक्तिगत इतिहास के बारे में कम से कम चार बातें बताता है। पहली बात, वह एक प्रेरित नहीं था। वास्तव में, ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि लूका उनमें से किसी भी घटना का प्रत्यक्षदर्शी रहा हो जिनके बारे में उसने अपने सुसमाचार जानकारी दी है। लूका के सुसमाचार 1:1-2 के इन विवरणों को सुनें :

> इसलिए कि बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं इतिहास लिखने में हाथ लगाया है। जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से इन बातों के देखने वाले और वचन के सेवक थे हम तक पहुँचाया। (लूका 1:1-2)

> चारों सुसमाचारों में केवल लूका की प्रस्तावना ही ऐसी है जैसी एक इतिहासकार अपनी ऐतिहासिक रचना का परिचय देने के लिए देता है। अतः इसका आशय यह है कि लूका को इसकी जानकारी थी कि वह उस समय की ऐतिहासिक विधि का प्रयोग कर रहा था। और अपनी प्रस्तावना में वह अपने स्रोतों के बारे में बताता है। वह स्वयं प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा नहीं करता है परन्तु वह प्रत्यक्षदर्शी की गवाही को लेने और उसे लिखने का दावा करता है। अतः हम प्रत्यक्षदर्शी की गवाही के उसके दावे को देखते हैं। परन्तु पौलुस की अन्तिम यरूशलेम यात्रा के समय लूका उसके साथ था और पौलुस के यरूशलेम में पहुँचने के बाद एक समय था जब पौलुस लगभग दो वर्ष के लिए बन्दीगृह में रहता है। और ऐसा प्रतीत होता है कि उस अवधि के दौरान लूका यरूशलेम और फिलिस्तीन के अन्य स्थानों पर घूम रहा था। उसके पास पर्याप्त समय था, 2 वर्ष का समय जब वह एक अच्छे प्राचीन इतिहासकार के समान प्रत्यक्षदर्शियों का साक्षात्कार कर सकता था जो यरूशलेम की कलीसिया के सदस्य थे, जैसे कि प्रभु का भाई याकूब जो निश्चित रूप से वहाँ था। बारह प्रेरितों में से कुछ लोग भी संभवतः यरूशलेम या फिलिस्तीन के अन्य स्थानों के आस-पास थे। अतः लूका प्रत्यक्षदर्शियों के साक्षात्कार के लिए बहुत ही अच्छी स्थिति में था। और फिर निःसन्देह वह पौलुस के साथ रोम जाता है जहाँ पर संभवतः ऐसे लोग होंगे जिनके पास यीशु की कहानी में से बताने के लिए उनकी अपनी कहानियाँ होंगी। अतः मेरे विचार में हम यह कह सकते हैं कि लूका प्रत्यक्षदर्शियों के साथ सम्पर्क करने के लिए बहुत अच्छी स्थिति में था।
>
> डॉ. रिचर्ड बॉखम

दूसरा, ऐसा प्रतीत होता है कि लूका गैरयहूदियों से मसीहियत में आया था। पौलुस ने बन्दीगृह में से कुलुस्सियों को पत्री लिखते समय लूका की ओर से उन्हें नमस्कार भेजा जब वह पौलुस के साथ था। सुनें पौलुस कुलुस्सियों 4:14 में क्या लिखता है,

> प्रिय वैद्य लूका और देमास का तुम्हें नमस्कार। (कुलुस्सियों 4:14)

यह महत्वपूर्ण है क्योंकि पद 10-11 में पौलुस ने कहा था कि उस समय यहूदियों में से उसके साथ केवल अरिस्तर्खुस, मरकुस, और युस्तुस की सेवकाई कर रहे थे। अतः, यह निष्कर्ष तार्किक है कि लूका एक गैरयहूदी था। इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि प्रेरितों के काम 1:19 में लूका ने अरामी को "उनकी भाषा" कहा है। अरामी यहूदियों की भाषा थी परन्तु उसकी नहीं।

तीसरा, लूका सुशिक्षित प्रतीत होता है। नए नियम की बहुत-सी पुस्तकें यूनानी की सामान्य शैली में लिखी हैं। परन्तु लूका का सुसमाचार विद्वानी भाषा का प्रयोग करता है।

लूका के सुशिक्षित होने का तथ्य भी कुलुस्सियों 4:14 में पौलुस द्वारा "वैद्य" के रूप में उसकी पहचान में प्रतिबिम्बित होता है। नए नियम के समयों में चिकित्सा आज के समान एक औपचारिक संकाय नहीं थी परन्तु फिर भी उसके लिए एक दक्ष और सीखने की क्षमता रखने वाले व्यक्ति की आवश्यकता थी।

लूका के व्यक्तिगत इतिहास के बारे में हमें ज्ञात चौथी बात यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में बताई गई बहुत-सी घटनाओं में सेवकाई के समय वह पौलुस का सहभागी था।

फिलेमोन पद 24 में पौलुस द्वारा किए गए वर्णन के अनुसार लूका उसका “सहकर्मी” था। प्रेरितों के काम 16:6-10 के अनुसार लूका पहले त्रोआस में पौलुस के साथ जुड़ा और फिर जब पौलुस ने मकिदुनिया की मिशनरी बुलाहट का प्रत्युत्तर दिया तो उसके साथ गया। उस समय के बाद से प्रेरितों के काम 16:40-20:5 में वर्णित फिलिप्पी में लम्बे ठहराव के अतिरिक्त लूका प्रायः पौलुस के साथ था। लूका की विश्वासयोग्यता विशेषतः प्रेरितों के काम 27:1 में प्रकट होती है जब वह रोम की खतरनाक यात्रा पर पौलुस के साथ जाता है।

> जब मैं नए नियम के सारे लोगों के बारे में सोचता हूँ तो मैं लूका से मिलना चाहूँगा। किसी समय मैं भी एक चिकित्सक बनना चाहता था इसलिए उसने मुझे सदैव आकर्षित किया है। और जब एक सुसमाचार को लिखने की उसकी योग्यता की बात आती है तो मेरे विचार में ऐसी कई बातें हैं जो मेरे दृष्टिकोण के अनुरूप हैं। पहली व्यक्तिगत है। प्रेरितों के काम 16 में लूका “हम” कहकर लिखना आरम्भ करता है। अचानक ही वह परिदृश्य में आ जाता है; अब वह केवल किसी और की सूचना को नहीं लिख रहा है। परन्तु लूका उन लोगों की मण्डली में शामिल हो जाता है जो यथार्थ में होने वाली घटनाओं के भाग थे और उन्हें आरम्भिक मसीहियत का प्रत्यक्ष अनुभव करने का अवसर मिल रहा था। और मेरे विचार में वह एक उत्साहजनक बात है। दूसरी बात केवल यह तथ्य है कि वह एक वैद्य था। जब मैं स्वयं चिकित्सक बनने के प्रशिक्षण के बारे में सोचता हूँ तो मैं जानता हूँ कि वह ऐसा व्यक्ति है जो सटीक निदान चाहता है। वे अपने तथ्यों को सावधानी से एकत्रित करते हैं और चाहते हैं कि उनके विवरण सटीक हों क्योंकि उनका जो भी निष्कर्ष होगा वह रोगी की भलाई के लिए होगा। लूका के बारे में मुझे छूने वाली तीसरी बात संभवतः यूनानी-रोमी संसार में यात्रा के बारे में उसका दृष्टिकोण है। सुसमाचार की कहानी में उसका दृष्टिकोण इस्राएल या फिलिस्तीन तक भी सीमित नहीं है। यह एक वैश्विक दृष्टिकोण है। आज जब हम मसीही सुसमाचार के वैश्विकरण के बारे में चिन्तित हैं तो हम लूका को सच्ची समझ के साथ पढ़ सकते हैं क्योंकि उसे यूनान और रोम और यूनानी-रोमी संसार के अन्य स्थानों में एक अवसर मिला था। उसके पास यह देखने का अवसर था कि जिस संस्कृति में यीशु का सन्देश दिया जा रहा था वहाँ उस सन्देश को कैसे लागू किया जाएगा।
>
> डॉ. स्टीव हार्पर

तीसरे सुसमाचार के लेखन को देखने के बाद आइए हम लूका के मूल पाठकों की पहचान को देखते हैं।

मूल पाठक

हम लूका के मूल पाठकों का अध्ययन दो प्रकार से करेंगे। पहला, हम थियुफिलुस के लिए पुस्तक के प्रत्यक्ष समर्पण को देखेंगे। और दूसरा, हम इस संभावना पर भी विचार करेंगे कि पुस्तक एक विशाल पाठक समूह के लिए भी लिखी गई थी। आइए हम लूका के पहले पाठक के रूप में थियुफिलुस के साथ आरम्भ करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

थियुफिलुस

> सदियों से इस पर अत्यधिक वाद-विवाद होता आया है कि थियुफिलुस कौन था और लूका 1:1-4 में यह किसे बताता है और प्रेरितों के काम 1:1-2 में भी उसका वर्णन है। “थियुफिलुस” शब्द का अर्थ “परमेश्वर का प्रेमी” है और इस कारण बहुत से लोगों ने यह सोचा कि संभवतः थियुफिलुस किसी व्यक्ति का नाम नहीं था परन्तु वह लूका के सुसमाचार के पाठकों का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी कलीसिया में परमेश्वर के प्रेमी होंगे। निःसन्देह, एक और बड़ी संभावना यह है कि थियुफिलुस एक व्यक्ति था। अधिकाँश विद्वान इस दूसरे विचार को मानते हैं क्योंकि लूका उसे श्रीमान “क्राटिस्टा” कहकर संबोधित करता है। और बाद में लूका उसी शब्द “क्राटिस्टा” का प्रयोग रोमी अधिकारियों, फेलिक्स और अग्रिप्पा को संबोधित करने के लिए करता है। अतः स्पष्टतः लूका के मन में यह एक तकनीकी अभिव्यक्ति है जो एक उच्च पद वाले व्यक्ति को और विशेषतः रोमी सरकार के उच्चाधिकारी की ओर संकेत करती है। इसके अतिरिक्त, लूका 1:1-4 एक समर्पण प्रतीत होता है। यह परिचयात्मक समर्पणों की शैली के शब्दों के अनुरूप है। और ऐतिहासिक रचनाओं को प्रायः इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हुए किसी संरक्षक के प्रति समर्पित किया जाता था, एक ऐसे व्यक्ति के प्रति जो वास्तव में उस रचना का मूल्य चुकाता था। और इसलिए, यह वास्तव में समर्पण कथनों के अनुरूप है और इस कारण यह लगभग निश्चित है कि थियुफिलुस एक व्यक्ति था।
>
> डॉ. डेविड बौएर

लूका की प्रस्तावना यह संकेत देती है कि थियुफिलुस उसका संरक्षक था, उसी ने उसे पुस्तक लिखने के लिए अधिकृत किया था और उसकी आर्थिक सहायता की थी। लूका 1:3 में लूका ने अपनी कृति में “श्रीमान थियुफिलुस” या क्राटिस्टे थियोफिले को संबोधित किया। क्राटिस्टे शब्द एक उच्च आदर का शब्द था। वास्तव में, पूरे नए नियम में इसका प्रयोग केवल दो और लोगों: फेलिक्स और फेस्तुस के लिए किया गया है। यदि थियुफिलुस एक उच्च पद वाला रोमी अधिकारी नहीं भी था तो भी वह निश्चित रूप से प्रतिष्ठा और महत्व वाला व्यक्ति था।

परन्तु लूका और थियुफिलुस के बीच का संबंध केवल संरक्षण से कहीं अधिक जटिल था। एक अर्थ में, थियुफिलुस लूका का शिष्य भी था। लूका 1:3-4 में हम इन वचनों को पढ़ते हैं :

> इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस, मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूँ कि तू यह जान ले, कि ये बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं। (लूका 1:3-4)

थियुफिलुस पहले ही यीशु के बारे में जानता था। परन्तु लूका ने यीशु के जीवन में बारे में इस पूर्ण और अधिक व्यवस्थित अभिलेख को इसलिए लिखा कि थियुफिलुस को उन बातों का निश्चय हो जाए जो उसे सिखाई गईं थीं।

लूका द्वारा अपने पहले पाठक के रूप में थियुफिलुस का उल्लेख करने के बारे में देखने के बाद विशाल पाठकों के लिए लूका की रचना को देखना भी सहायक है।

विशाल पाठक

यह सोचने के बहुत से कारण हैं कि लूका ने केवल थियुफिलुस की अपेक्षा बड़ी संख्या में दूसरे पाठकों के लिए लिखा। आरम्भिक मसीहियों में पत्रों और अन्य रचनाओं को आपस में बाँटने की प्रवृत्ति थी। एक उदाहरण के रूप में देखें कि पौलुस ने कुलुस्सियों 4:16 में क्या लिखा है :

> जब यह पत्र तुम्हारे यहाँ पढ़ लिया जाए तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना। (कुलुस्सियों 4:16)

आरम्भिक मसीहियों में अपनी पुस्तकों को आपस में बाँटने की प्रवृत्ति थी तो यह अनुमान उपयुक्त प्रतीत होता है कि थियुफिलुस भी लूका की पुस्तकों को दूसरों के साथ बाँटने के लिए उत्सुक रहा होगा।

इसके अतिरिक्त, सुसमाचार की उच्च साहित्यिक शैली इस बात को लगभग निश्चित बनाती है कि लूका ने उसे विशाल पाठकों को ध्यान में रखते हुए लिखा था। शैली केवल एक व्यक्ति के लिए की गई निजी टिप्पणी के रूप में नहीं है। लूका 1:3 में लूका जिस विस्तृत ऐतिहासिक खोज के बारे में बताता है उसका संकेत भी अधिक विस्तृत पाठकों की ओर है। और इसके अतिरिक्त, सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक का बड़ा आकार यह सुझाव देता है कि लूका ने बड़ी संख्या में पाठकों को ध्यान में रखते हुए एक प्रमुख रचना को लिखा था। परन्तु वे पाठक कौन थे?

सर्वाधिक संभावना यह प्रतीत होती है कि लूका ने मुख्यतः गैरयहूदी मसीहियों के लिए लिखा था। उदाहरण के लिए, यूनानी की उसकी शैली गैरयहूदियों जैसी थी। और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार की सार्वभौमिक प्रस्तुति ने इस पर बल दिया कि उद्धार सारी जातियों के लिए था। निःसन्देह, लूका का सुसमाचार यहूदी मसीहियों के लिए मूल्यवान रहा होगा। परन्तु मत्ती के सुसमाचार के समान इसे उनके लिए नहीं लिखा गया था।

एक सामान्य अर्थ में परमेश्वर सदैव यह चाहता है कि सम्पूर्ण इतिहास में उसके सब लोग सम्पूर्ण बाइबल को पढ़ें और समझें। परन्तु यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि जब पवित्र आत्मा ने लेखकों को उनकी पुस्तकों को लिखने के लिए प्रेरित किया तब उसने उनके निजी व्यक्तित्व और रूचियों के द्वारा कार्य किया। इस प्राथमिक अर्थ में, लूका ने अपनी पुस्तक को प्रत्यक्ष रूप से थियुफिलुस और पहली सदी के दूसरे गैरयहूदी मसीहियों की आवश्यकताओं के लिए लिखा। आधुनिक पाठक उसे सुन रहे हैं जिसे लूका ने उनके लिए लिखा था। परन्तु इस सुसमाचार को पढ़ते समय यदि हम लूका और उसके मूल पाठकों को ध्यान में रखते हैं तो हम उसके द्वारा लिखी गई बातों को बेहतर रूप से समझने और उसे हमारे स्वयं के जीवनों में लागू करने के लिए तैयार हो सकेंगे।

सुसमाचार के लेखक और पाठकों को जानने के बाद अब हम उसके अवसर को जाँचने के लिए तैयार हैं।

अवसर

हम लूका के सुसमाचार के अवसर को दो प्रकार से देखेंगे। पहला, हम उसके लिखने की तिथि पर विचार करेंगे। और दूसरा, हम इसे लिखने के पीछे लूका के उद्देश्य को देखेंगे। आइए हम लूका के सुसमाचार की तिथि के साथ आरम्भ करते हैं।

तिथि

कम से कम दो बातें सन् 65 और 67 के बीच की तिथि की ओर संकेत करते हैं। पहली, लूका के सुसमाचार और मरकुस के सुसमाचार के बीच तुलना के द्वारा नए नियम के अधिकाँश विद्वान इस बात पर

सहमत हैं कि लूका ने मरकुस के सुसमाचार का अपने शोध के एक स्रोत के रूप में प्रयोग किया है। मरकुस पर हमारे पहले के एक अध्याय में हमने यह निष्कर्ष निकाला था कि मरकुस के सुसमाचार की प्राचीनतम संभावित तिथि सन् 64 थी। यदि लूका ने मरकुस का प्रयोग किया है तो उसके सुसमाचार की तिथि उसके बाद किसी समय होगी, संभवतः सन् 65 के लगभग होगी।

दूसरी, प्रेरितों के काम की पुस्तक सन् 67 और निश्चित रूप से सन् 69 से पहले की तिथि की ओर संकेत करती है। प्रेरितों के काम में महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में नहीं बताया गया है जैसे, सन् 65 के लगभग हुई पौलुस की शहादत; नीरो का सताव जो सन् 68 में समाप्त हुआ; या सन् 70 में यरूशलेम का पतन। ये महत्वपूर्ण घटनाएँ सुझाव देती हैं कि लूका प्रेरितों के काम को इन घटनाओं के होने से पहले या कम से कम उनके बारे में जानकारी मिलने से पहले लिखा था। और प्रेरितों के काम 1:1 के अनुसार लूका का सुसमाचार प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखने से पहले ही पूरा हो गया था। अतः यह संभवना प्रतीत होती है कि लूका ने अपने सुसमाचार को सन् 67 तक पूरा कर लिया था। और उसने निश्चित रूप से उसे यरूशलेम के पतन से पहले सन् 69 से पहले समाप्त कर लिया था।

लूका की तिथि पर विचार करने के बाद आइए अब हम उसके उद्देश्य को देखते हैं।

उद्देश्य

लूका 1:3-4 में लूका ने अपने शोध और इस सुसमाचार को लिखने के निम्नलिखित कारण बताए हैं :

> इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूँ कि तू यह जान ले, कि ये बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं। (लूका 1:3-4)

लूका ने थियुफिलुस और उसके समान गैरयहूदी मसीहियों को यहूदी मसीहा यीशु पर उनके नए विश्वास में दृढ़ बनाने के लिए लिखा था।

लूका के लिखते समय थियुफिलुस जैसे गैरयहूदी मसीही अपने विश्वास के संबंध में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रहे थे। ये चुनौतियाँ कम से कम दो स्रोतों की ओर से थी। पहला, रोम में मसीहियों पर नीरो के अत्याचार से यह भय फैल गया कि अत्याचार पूरे साम्राज्य में फैल सकता है। और इस भय के कारण कुछ लोगों के मन में इस मसीही दावे पर सन्देह उत्पन्न हो गया कि यीशु ने परमेश्वर के राज्य को स्थापित कर दिया था।

दूसरा, मसीही मुख्यतः यहूदी कलीसिया में गैरयहूदी मसीहियों के स्थान के बारे में वाद-विवाद कर रहे थे। और इस पूर्वाग्रह एवं विभाजन ने इस दावे पर सन्देह उत्पन्न कर दिया कि यीशु ने मानवजाति के प्रत्येक परिवार के लिए उद्धार की पेशकश की।

इन चुनौतियों और सन्देहों के जवाब में लूका ने गैरयहूदी विश्वासियों को यह आश्वासन दिलाने के लिए लिखा कि यीशु के पीछे होने में उन्होंने सही निर्णय लिया है। यीशु ने वास्तव में परमेश्वर के राज्य का उद्घाटन किया था। और गैरयहूदी मसीही वास्तव में परमेश्वर के घराने के पूर्ण सदस्य थे। यदि वे यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहते हैं तो वे इस बात के बारे में निश्चित हो सकते हैं कि उन्हें उद्धार की सारी आशीषें प्राप्त होंगी।

लूका के सुसमाचार की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण करने के बाद आइए अब हम हमारे दूसरे प्रमुख बिन्दू : उसकी संरचना एवं विषय-सूची को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

संरचना एवं विषय-सूची

इस श्रंखला के पूर्व के अध्यायों से आपको याद होगा कि एक विशाल स्तर पर चारों सुसमाचार क्रमानुसार यीशु के जीवन के बारे में बताते हैं। परन्तु, एक छोटे स्तर पर कई बार वे यीशु के बारे में अपनी कहानियों को विभिन्न सिद्धान्तों के अनुसार संगठित करते हैं। उदाहरण के लिए, हमने देखा कि मत्ती और मरकुस ने कई बार अपने लेखनों को कुछ विषयों के अनुसार व्यवस्थित किया है। तुलनात्मक रूप से लूका ने अपने सुसमाचार को अधिकाँशतः भूगोल के अनुसार व्यवस्थित किया है।

हमारे उद्देश्यों के लिए इस अध्याय में हम लूका के सुसमाचार को छः भागों में विभाजित करेंगे- 1:1-4 में एक लघु प्रस्तावना के बाद कहानियों के पाँच मुख्य समूह :

- सुसमाचार का पहला मुख्य भाग यीशु की शुरूआतों का वर्णन करता है और यहूदिया एवं यरदन नदी के क्षेत्रों पर केन्द्रित है। यह भाग 1:5-4:13 तक है।
- दूसरा मुख्य भाग गलील में यीशु की सेवकाई के बारे में है जो 4:14-9:50 तक है।
- तीसरा मुख्य भाग 9:51-19:27 में यीशु की यरूशलेम यात्रा की जानकारी देता है।
- चौथा मुख्य भाग 19:28-21:38 में यरूशलेम और उसके आस-पास के क्षेत्रों में यीशु की सेवकाई के बारे में है।
- अन्ततः, लूका के सुसमाचार का पाँचवाँ और अन्तिम भाग यीशु की क्रूस पर मृत्यु और यरूशलेम के बाहर पुनरूत्थान की कहानी है जो 22:1-24:53 में दी गई है।

चूंकि हम लूका की प्रस्तावना को पहले ही देख चुके हैं इसलिए लूका 1:5-4:13 में यीशु की शुरूआतों से आरम्भ कर के उसकी कहानी के पाँच मुख्य भागों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

यीशु की शुरूआतें

यीशु की शुरूआतों का लूका का अभिलेख यीशु के जन्म से कुछ पहले आरम्भ होता है और उसकी सार्वजनिक सेवकाई से पहले के उसके सम्पूर्ण जीवन तक विस्तृत है।

इन अध्यायों में लूका का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र और दाऊद का पुत्र भी है और इस प्रकार वह पूर्णतः दैवीय और पूर्णतः मानवीय है। इसके अतिरिक्त, दाऊद के पुत्र के रूप में यीशु मसीहा या मसीह भी था जो परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाकर संसार को उद्धार देने वाला था।

इस पूरी कहानी में लूका ने यह दिखाने के लिए नियमित रूप से पुराने नियम में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का उल्लेख किया है कि परमेश्वर यीशु के द्वारा उन प्रतिज्ञाओं को पूरा कर रहा था। और इसलिए परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने और उसके राज्य की आशीषों को पाने का एकमात्र मार्ग यीशु को राजा और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना था।

इन अध्यायों को चार मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है : यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के जन्म की घोषणाएँ; उनके जन्म और बचपन; यूहन्ना द्वारा यीशु की पहचान; और यीशु के परमेश्वर के पुत्र होने के बारे में तीन पुष्टियाँ। आइए हम लूका 1:5-56 में जन्म की घोषणाओं से आरम्भ करते हैं।

जन्म की घोषणाएँ

यह महत्वपूर्ण है कि लूका ने अपने सुसमाचार की शुरूआत जिब्राएल स्वर्गदूत के प्रकटीकरण के साथ की। सैंकड़ों वर्ष पूर्व दानिय्येल अध्याय 9 में बताया गया था कि जिब्राएल ने घोषणा की थी कि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस्राएल सैंकड़ों वर्षों तक निर्वासित रहेगा। जब तक परमेश्वर का दण्ड उन पर रहेगा तब तक इस्राएल दासत्व में रहेगा। परन्तु लूका के सुसमाचार में जिब्राएल ने घोषणा की कि दण्ड की अवधि समाप्त होने वाली थी।

लूका 1:5-25 में जिब्राएल ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म की भविष्यद्वाणी की। जिब्राएल यहूदिया में जकर्याह याजक के सामने प्रकट हुआ और उसे बताया कि उसकी बांझ पत्नी इलीशिबा आश्चर्यजनक रूप से एक बच्चे को जन्म देगी। उन्हें उसका नाम यूहन्ना रखना था। वह जन्म से ही पवित्र आत्मा से भरा होगा और परमेश्वर के उद्धार का मार्ग तैयार करने के लिए महान भविष्यद्वक्ता एलिय्याह की आत्मा में सेवा करेगा। पहले जकर्याह ने जिब्राएल के सन्देश पर सन्देह किया इसलिए अपने पुत्र के जन्म के समय तक वह बोल नहीं सका।

लूका ने यूहन्ना के जन्म की घोषणा को लूका 1:26-38 में जिब्राएल की उससे भी बड़ी घोषणा से जोड़ा। जिब्राएल ने मरियम से कहा कि परमेश्वर आश्चर्यजनक रूप से उसकी कोख में एक पुत्र उत्पन्न करेगा और स्वयं परमेश्वर ही उस बालक का पिता होगा। परमेश्वर के पुत्र का नाम यीशु, अर्थात् "उद्धारकर्ता" रखना था। इसके अतिरिक्त, वह अपने पुरखे दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी होगा अर्थात् वह दाऊद का वंशज मसीह होगा जो परमेश्वर के अनन्त राज्य के उद्धार को पृथ्वी पर लाएगा।

मरियम और एलीशिबा चचेरी बहनें थी इसलिए मरियम यहूदिया में इलीशिबा के पास यह बताने के लिए गई कि उसकी कोख में परमेश्वर का पुत्र है। इसके बारे में हम लूका 1:39-56 में पढ़ते हैं। जब मरियम ने इलीशिबा को नमस्कार किया तो बच्चा अपनी माँ के गर्भ में आनन्द से उछला और तुरन्त ही इलीशिबा आत्मा से भर गई ताकि वह अपने बच्चे की प्रतिक्रिया के महत्व को समझ सके। इलीशिबा ने मरियम के पुत्र को अपना प्रभु कहते हुए मरियम को धन्य कहा। और जवाब में मरियम ने अपने बच्चे के द्वारा आने वाले उद्धार पर अत्यधिक आनन्द को अभिव्यक्त करते हुए लूका 1:46-55 में अपना विख्यात स्तुति गीत गाया जिसे प्रायः 'द मैग्नीफिकेट' कहा जाता है।

जन्म की घोषणाओं के बाद लूका ने लूका 1:57-2:52 में यूहन्ना और यीशु के जन्म और बचपन की तुलना की।

जन्म और बचपन

यूहन्ना के जन्म और बचपन के बारे में लूका के अभिलेख को लूका 1:57-80 में पाया जा सकता है। यूहन्ना का जन्म बुजुर्ग माता-पिता के यहाँ हुआ था। और जब आठवें दिन वे ख़तने के लिए उसे मन्दिर में लेकर आए तो उसके पिता की आवाज लौट आई। उस समय जकर्याह पवित्र आत्मा से भरकर भविष्यद्वाणी करने लगा कि उसका पुत्र दाऊद के वंशज मसीह का मार्ग तैयार करेगा।

देखें लूका 1:69-76 में जकर्याह ने मसीहा की भूमिका का वर्णन किस प्रकार किया है :

> (परमेश्वर ने) अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिए एक उद्धार का सींग निकाला। जैसे उस ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो जगत के आदि से होते आए हैं, कहा था... अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करे और वह शपथ जो उस ने हमारे पिता अब्राहम से खाई थी... और तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिए उसके आगे-आगे चलेगा। (लूका 1:69-76)

पुराने नियम में परमेश्वर ने अब्राहम और दाऊद के साथ उद्धार की वाचा के वायदे किए थे। और जकर्याह ने भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर उन वायदों को पूरा करने वाला है और उसका पुत्र यूहन्ना मार्ग तैयार करने वाला भविष्यद्वक्ता होगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

फिर लूका 2:1-52 में लूका ने यीशु के जन्म और बचपन के बारे में बताया। इस अभिलेख और यूहन्ना के जन्म के बारे में उसके पिछले अभिलेख में कई समानताएँ हैं परन्तु यीशु के जन्म और बचपन के बारे में लूका का अभिलेख कहीं अधिक बड़ा और विस्तृत है। इसकी शुरूआत दाऊद के नगर, यहूदा के बेतलेहम में यीशु के जन्म के साथ होती है जिसके बारे में लूका 2:1-20 में बताया गया है।

यीशु का जन्म अत्यधिक निर्धनता में हुआ था। उसका जन्म एक गौशाला में हुआ और उसे एक चरनी में रखा गया। परन्तु आस-पास के चरवाहों को उसके जन्म की सूचना देने वाली स्वर्गदूतों की घोषणा शाही थी। सुनें स्वर्गदूतों ने लूका 2:10-11 में चरवाहों से क्या कहा :

> तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिए होगा। आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है। **(लूका 2:10-11)**

स्वर्गदूत ने यह सुसमाचार सुनाया कि मसीहारुपी राजा परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के दण्ड से बचाएगा।

फिर इस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों की एक बड़ी सेना दिखाई दी जो यीशु के जन्म के लिए परमेश्वर की स्तुति कर रही थी। लूका ने यह स्पष्ट किया कि निर्धनता में जन्म के बावजूद मरियम का पुत्र वास्तव में परमेश्वर का चुना हुआ मसीहा और राजा था।

फिर लूका 2:21-40 में लूका ने यीशु को यरूशलेम मन्दिर में लाए जाने और खतने का वर्णन किया। मन्दिर में शिमौन के साथ-साथ पवित्र भविष्यद्वक्तिन हन्ना ने पवित्र आत्मा से भरकर घोषणा की कि यीशु ही वह मसीहा था जो संसार में उद्धार लाने वाला था। लूका 2:30-32 में शिमौन द्वारा परमेश्वर की स्तुति को सुनें :

> क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है कि वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिए ज्योति, और तेरी निज प्रजा इस्राएल की महिमा हो। **(लूका 2:30-32)**

यह यशायाह 49:6 की पूर्णता थी जहाँ परमेश्वर ने ये वचन कहे थे :

> यह तो हल्की-सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिए मेरा सेवक ठहरे, मैं तुझे गैरयहूदियों के लिए ज्योति ठहराऊँगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए। **(यशायाह 49:6)**

शिमौन के द्वारा परमेश्वर ने प्रकट किया कि यीशु वह मसीहा था जो इस्राएल के लिए उद्धार और महिमा लाने वाला था। और इससे बढ़कर, वह परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार को गैरयहूदी राष्ट्रों तक भी फैलाएगा ताकि वे भी उद्धार पाएँ।

अन्ततः, लूका 2:41-52 में मन्दिर में यीशु की संक्षिप्त कहानी के साथ लूका यीशु के पुत्र होने के विषय की ओर वापस लौटता है। जब यीशु बारह वर्ष का था तो वह फसह के पर्व के लिए अपने माता-पिता के साथ यरूशलेम गया परन्तु वापस लौटते समय वह अपने माता-पिता से बिछुड़ गया। उसके माता-पिता ने कई दिनों बाद उसे मन्दिर के आँगन में शास्त्रियों से बातें करते हुए पाया। यीशु के ज्ञान और समझ से मन्दिर में हर कोई चकित रह गया। जब मरियम ने यीशु का सामना किया तो उसके उत्तर ने यह प्रकट किया कि वह कितना विशेष था। सुनें लूका 2:49 में यीशु ने मरियम से क्या कहा :

> क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है? (लूका 2:49)

मन्दिर उसके पिता का घर था क्योंकि यीशु परमेश्वर का पुत्र था।

यूहन्ना और यीशु के जन्म और बचपन के बाद लूका ने लूका 3:1-20 में यूहन्ना द्वारा यीशु की पहचान की जानकारी दी।

यूहन्ना द्वारा यीशु की पहचान

इस विवरण में यूहन्ना ने औपचारिक रूप से यीशु की मसीहा के रूप में पहचान करने के द्वारा परमेश्वर के उद्धार का मार्ग तैयार किया। यरदन नदी के क्षेत्र में अपनी प्रचार की सेवकाई में यूहन्ना ने परमेश्वर के राज्य के आगमन की घोषणा की, लोगों को अपने पापों से मन फिराने का उपदेश दिया और मन फिराने वालों को बपतिस्मा दिया। परन्तु जब यीशु बपतिस्मा लेने के लिए उसके पास आया तो यूहन्ना ने मसीहा के रूप में उसकी पहचान की और साफ शब्दों में घोषणा की कि वह मसीहा की जूती का बन्ध खोलने के भी योग्य नहीं है। यूहन्ना ने कहा कि यीशु पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा जैसा यशायाह 44:3 और यहेजकेल 39:29 जैसे पुराने नियम के परिच्छेदों में बताया गया है। और इसका अर्थ यह था कि इतिहास का अन्तिम युग, वह समय आ चुका था जब परमेश्वर का उद्धार पूर्ण होगा।

> यह देखना रोचक है कि पुराने नियम में निर्गमन 19 में जब इस्राएल परमेश्वर की वाणी सुनती थी या परमेश्वर सीनै पहाड़ पर उतरने वाला था तब उन्हें अपने वस्त्रों को धोने और स्वयं को शुद्ध करने की आज्ञा दी गई थी। और यह प्रकट होता है कि शुद्धिकरण एक ऐसी बात थी जिसे लोग परमेश्वर के आगमन या उसके प्रकटीकरण की तैयारी के लिए करते थे। और यदि हम यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की घोषणा को देखें तो वह मूलतः यह कह रहा है कि न्याय के लिए परमेश्वर आ रहा है और लोगों को मन फिराव और फिर बपतिस्मा के द्वारा स्वयं को तैयार करने की आवश्यकता है।
>
> डॉ. डेविड रेडलिंग्स

> सुसमाचारों में हम यूहन्ना को लोगों को बपतिस्मा देते हुए देखते हैं। और फिर यीशु बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आता है। वह ऐसा क्यों करेगा? मेरा मतलब है, यूहन्ना कह रहा है मन फिराओ और परमेश्वर के राज्य के लिए तैयार हो जाओ। क्या यीशु को मन फिराने की आवश्यकता है? बिल्कुल नहीं। वह परमेश्वर का निष्पाप पुत्र है। तो फिर वह यूहन्ना से बपतिस्मा क्यों लेता है? यह समझना महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना का बपतिस्मा राज्य के आगमन की तैयारी के लिए था। जब वह लोगों को मन फिराने, विश्वास करने के लिए बुलाता है तो वह मसीही बपतिस्मा के समान नहीं है जिसमें वह यह घोषणा कर रहा है कि राज्य आ रहा है; राजा आ रहा है। उन्हें उसके लिए तैयार होना है। जब यीशु बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आता है तो वह अपनी सेवकाई को आरम्भ करने के लिए आ रहा है। सुसमाचारों में बपतिस्मा की शुरूआत यीशु की सेवकाई के आरम्भ में होती है। वह हमारी समानता को ग्रहण कर रहा है-मत्ती के शब्दों में सोचें - सारी धार्मिकता को पूरा करने के लिए। यह इसलिए नहीं है कि उसे मन फिराने की आवश्यकता है। यह इसलिए नहीं है कि वह एक पापी है। यह इसलिए है कि वह अपने लोगों के समान बन रहा है। वह अपनी सार्वजनिक सेवकाई को आरम्भ कर रहा है। वह

> अपने जीवन में हमारे प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रहा है जो बाद में उसकी मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण में पूर्ण होगा। यही कारण है कि वह आता है और यूहन्ना से बपतिस्मा लेता है कि अपनी सेवकाई का उद्‌घाटन करे, अपने कार्य को आरम्भ करे और यह घोषणा करे कि यूहन्ना जिसकी प्रतीक्षा में था वह उसमें आ रहा है। वही है जो राज्य को ला रहा है।
>
> डॉ. स्टीफन वेल्लम

यूहन्ना द्वारा यीशु की पहचान पर विचार करने के बाद आइए हम इस विवरण के चौथे और अन्तिम भाग की ओर बढ़ते हैं: लूका 3:21-4:13 में यीशु की परमेश्वर के पुत्र के रूप में पुष्टि।

परमेश्वर के पुत्र के रूप में पुष्टियाँ

लूका ने यीशु के परमेश्वर के पुत्र होने के बारे में तीन अलग-अलग पुष्टियाँ उपलब्ध करवाई हैं जिनकी शुरूआत लूका 3:21-22 में दैवीय पुष्टि से होती है। लूका 3:22 में यीशु के बपतिस्मा के इस विवरण को सुनें :

> पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर की नाईं उस पर उतरा और यह आकाशवाणी हुई, "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।" (लूका 3:22)

यीशु के बपतिस्मा के समय आत्मा के दृश्य प्रकटीकरण और स्वर्ग से वाणी के द्वारा स्वयं परमेश्वर ने सार्वजनिक रूप से यह पुष्टि की कि यीशु उसका पुत्र है।

फिर लूका ने लूका 3:23-38 में वंशावली के द्वारा यह पुष्टि की कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

मत्ती के समान लूका ने दाऊद और अब्राहम के धर्मी वंश के द्वारा यीशु की वंशावली को बताया। परन्तु मत्ती से अलग, लूका ने अपने विवरण में आदम तक मानवता की सारी धर्मी वंशावली को शामिल किया। इस वंशावली के महत्व को समझने के लिए लूका 3:38 में इसकी समाप्ति को देखें :

> वह इनोश का, और वह शेत का, और वह आदम का, और वह परमेश्वर का था। (लूका 3:38)

लूका ने आदम को "परमेश्वर का पुत्र" कहा - इन अध्यायों में वही नाम यीशु को दिया गया है। इस प्रकार, लूका ने उसकी ओर संकेत किया जिसे नए नियम के अन्य भागों में स्पष्टता से सिखाया गया है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु को परमेश्वर के पहले पुत्र आदम के उद्देश्य को पूरा करना था। या जैसे 1 कुरिन्थियों 15:45 में प्रेरित पौलुस ने कहा है, यीशु "अन्तिम आदम" था। आदम पृथ्वी पर परमेश्वर का सेवक राजा था जिसे परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना था। परन्तु वह बुरी तरह से असफल हो गया। यीशु परमेश्वर का महान पुत्र है जो वहाँ सफल हुआ जहाँ आदम हार गया था और उसके द्वारा पृथ्वी की प्रत्येक जाति तक उद्धार आया।

परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की अन्तिम पुष्टि लूका 4:1-13 में स्वयं यीशु द्वारा की गई है।

यह मरूभूमि में परीक्षा का अभिलेख है। लूका 4:1 में लूका के वचन के अनुसार पवित्र आत्मा ने यीशु को भरा और उसे मरूभूमि में ले गया जहाँ शैतान ने उसकी परीक्षा की। शैतान ने यीशु को पत्थर को रोटी बनाने, शैतान से देशों पर अधिकार पाने और स्वयं को मन्दिर के कंगूरे पर से नीचे गिराने के लिए ललचाया। इन दो परीक्षाओं की शुरूआत शैतान ने इन उपहासपूर्ण शब्दों से की, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है।" जवाब में यीशु ने तीनों परीक्षाओं को दृढ़ता से अस्वीकार किया और पुराने नियम के उन परिच्छेदों का उल्लेख किया जो यह बताते हैं कि परमेश्वर के एक विश्वासयोग्य पुत्र को क्या करना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> मरूभूमि में शैतान से मुठभेड़ होने पर यीशु कई कारणों से बाइबल को उद्धृत करते हैं। सबसे पहले यह कि सुसमाचार के लेखक यीशु का परमेश्वर के सच्चे पुत्र के रूप में चित्रण कर रहे हैं। और इसलिए वचनों को उद्धृत करने का एक कारण परमेश्वर के साथ उसका वाचा का संबंध है। वह पवित्रशास्त्र की ओर जाता है और सारी बातों को व्यवस्थित रखने, पिता परमेश्वर के संबंध में अपने स्वयं के अधिकार और साथ ही शैतान के सीमित अधिकार का उचित दृष्टिकोण रखने के लिए अपनी वाचा के संबंध की अभिव्यक्ति में वचनों का प्रयोग करता है। और इसलिए केवल स्वयं को वाचा के संबंध की प्राथमिकता का स्मरण दिलाने के लिए वह कहता है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर एक वचन के द्वारा जीवित रहेगा और इससे शैतान की इन परीक्षाओं का सामना करने में उसे सहायता मिलती है। परन्तु हम देखते हैं कि वह पवित्रशास्त्र के एक विशेष भाग से, विशेषतः व्यवस्थाविवरण 6-8 में से वचन को उद्धृत करता है क्योंकि वहाँ पर मूसा परमेश्वर की प्रजा के मरूभूमि के अनुभव के बारे में बात करता है और किस प्रकार उस मरूभूमि के अनुभवों ने इस्राएलियों के मन की बात को प्रकट किया। और यीशु के पुत्रत्व की परीक्षा में कुछ ऐसा ही हो रहा है; जहाँ इस्राएल परीक्षा में हार गया वहीं यीशु ने परीक्षा में जय पाई। और इस प्रकार हम सुसमाचार लेखकों और यीशु द्वारा परीक्षा के विवरण में भी पुराने नियम के प्रयोग में इस प्रकार की तुलना को देखते हैं।
>
> डॉ. ग्रेग पैरी

इसके बाद यीशु की वंशावली आती है जो परमेश्वर के रूप में आदम के साथ समाप्त होती है इसलिए यीशु की परीक्षा के लूका के विवरण को उत्पत्ति अध्याय 3 में आदम की परीक्षा की तुलना में देखा जाना चाहिए। उस कहानी में शैतान ने अदन की वाटिका में आदम की परीक्षा की और जब आदम ने पाप किया तो परमेश्वर ने सारी सृष्टि को श्राप दिया और सारी मानवता को मरूभूमि में निकाल दिया। इसके विपरीत, मरूभूमि में यीशु ने परीक्षा का सामना किया और इससे यह पुष्टि हुई कि वह परमेश्वर का विश्वासयोग्य पुत्र था जो परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को वापस स्वर्ग में लाएगा।

यहूदिया और यरदन के क्षेत्र में यीशु की शुरूआत के बाद लूका के सुसमाचार का अगला मुख्य भाग गलील में यीशु की सेवकाई के बारे में बताता है। यह भाग 4:14-9:50 तक है।

गलील में यीशु की सेवकाई

सुसमाचार के इस भाग में लूका ने यह साबित करने के लिए यीशु की आश्चर्यजनक सामर्थ और सुसमाचार प्रचार के बहुत से उदाहरणों की जानकारी दी कि यीशु ही आत्मा द्वारा अभिषिक्त उद्धारकर्ता था जिसका वायदा पुराने नियम के द्वारा किया गया था।

गलील में यीशु की सेवकाई का वर्णन करने वाले लूका के विवरण को पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता हैः पहला, नासरत में यीशु का प्रचार; दूसरा, उसके उपदेश और आश्चर्यकर्म; तीसरा, यीशु और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की भूमिकाओं में अन्तर; और पाँचवाँ, यीशु द्वारा बारह प्रेरितों को सेवकाई के लिए तैयार करना। हम लूका 4:14-30 में नासरत में यीशु के पहले प्रचार से आरम्भ करके इनमें से प्रत्येक भाग को देखेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नासरत में प्रचार

तीनों समदर्शी सुसमाचार यीशु की गलीली सेवकाई के दौरान उसकी आश्चर्यजनक सामर्थ और सुसमाचार प्रचार पर बल देते हैं। परन्तु लूका की प्रस्तुति दूसरों से भिन्न है क्योंकि उसने यीशु की सेवकाई के इस चरण का परिचय अपने गृहनगर नासरत में प्रभु के पहले प्रचार के साथ दिया है। लूका ने बताया कि सब्त के दिन यीशु आराधनालय में था और उसे यशायाह की पुस्तक दी गई। उसने यशायाह 61:1-2 पढ़ा और फिर एक चौंकाने वाली घोषणा की। सुनें लूका 4:18-21 में यीशु ने क्या पढ़ा और कहा :

> प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुओं को छुड़ाऊँ। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ... आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है। (लूका 4:18-21)

> जब उसने कहा, "आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है," तब यीशु यह कह रहा था कि पुराने नियम में जो बताया गया है और जिसकी अपेक्षा रखी गई है वह अब पूरा हो रहा है। और जुबली का पूरा विचार यही था कि आपकी गणना के आधार पर 49वें या 50वें वर्ष में पुराने नियम के इस्राएल में लोगों को ऋणों से मुक्त कर दिया जाता था, उनकी पैतृक संपत्ति वापस लौटा दी जाती थी, उनके गोत्रों को मूसा और यहोशू के दिनों में दी गई उनकी भूमि उन्हें वापस लौटा दी जाती थी। यदि हम निर्गमन को छुटकारे के लिए पुराने नियम की एक बड़ी और महत्वपूर्ण घटना मानते हैं तो हमें यह भी समझने की आवश्यकता है कि जुबली वर्ष पुनर्स्थापना के लिए परमेश्वर का एक महत्वपूर्ण प्रबन्ध था। क्योंकि जब तक हम इस पापी संसार में रहते हैं तब तक छुटकारा हमें बचाएगा परन्तु पुनर्स्थापना परमेश्वर के छुटकारे का भाग है। और इसलिए यीशु इस जुबली के चिन्हों को दिखाना आरम्भ करता है। वह लोगों को शैतानी दमन से मुक्त करता है, उन्हें सामाजिक कलंक या सामाजिक भेदभाव से मुक्त करता है और उन्हें उनके सृष्टिकर्ता और उनके पिता से मिलवाता है।
>
> रेव्ह. माइकल ग्लोडो

यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि परमेश्वर के राज्य के आगमन से परमेश्वर के सारे विश्वासयोग्य लोगों को उद्धार मिलेगा। और यीशु ने घोषणा की कि वह दिन आ चुका है। यह कथन यीशु की सम्पूर्ण सेवकाई की व्याख्या के लिए लूका के मूलभूत आदर्श को अभिव्यक्त करता है : यीशु ही वह मसीहा, उद्धारकर्ता था जिसकी भविष्यद्वाणी पुराने नियम में की गई थी और जो अपने लोगों को उद्धार देने के द्वारा परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर प्रकट करेगा।

नासरत में यीशु के प्रचार की जानकारी देने के बाद लूका ने लूका 4:31-7:17 में यीशु के सामर्थी उपदेश और चमत्कारों के कई उदाहरणों की जानकारी दी।

उपदेश और चमत्कार

इस भाग में लूका ने दिखाया कि यीशु वास्तव में मसीहा था क्योंकि वह यशायाह 61:1-2 की भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहा था। यीशु ने लूका 4:31-36 में एक दुष्टात्मा से छुटकारा दिया। 4:38-42 में

उसने दूसरे बहुत से लोगों को चंगा किया। और लूका 5:1-11 में उसने अपने चेलों पतरस, याकूब और यूहन्ना को बुलाया।

और बाद के वचनों में भी हम इसी प्रारूप को पाते हैं जहाँ 5:12-15 में कोढ़ी और 5:17-26 में लकवाग्रस्त की चंगाईयों के बाद 5:27-32 में चेले लेवी या मत्ती को बुलाया जाता है।

यही प्रारूप अगले वचनों में भी दोहराया गया है। परन्तु चंगाईयों की बजाय लूका ने यीशु के उपदेशों को बताया है। 5:33-39 में यीशु ने सिखाया कि उसकी शारीरिक उपस्थिति से उपवास की समाप्ति और आनन्द होना चाहिए। 6:1-11 में यीशु ने सिखाया कि सब्त चंगाईयों और प्राणों को बचाने के लिए है। और 6:12-16 में उसने अपने चेलों में से बारह को अपने विशेष प्रेरित बनने के लिए चुना जिन्हें इस्राएल के लिए एक नए क्रम की स्थापना का कार्य सौंपा गया।

इन चमत्कारों और उपदेशों के द्वारा यीशु ने यह दिखाया कि वह वास्तव में यशायाह द्वारा भविष्यद्वाणी किया हुआ मसीहा था क्योंकि वह स्वतंत्रता, चंगाई और दमन से मुक्ति के रूप में प्रभु की कृपा को लाया था।

फिर लूका एक लम्बे प्रचार के बारे में बताता है जिसे यीशु ने लूका 6:17-49 में किया। इस प्रचार को प्रायः यीशु का मैदानी उपदेश कहा जाता है और इसमें मत्ती 5-7 अध्यायों के पहाड़ी उपदेश के साथ बहुत-सी समानताएँ हैं।

> मत्ती और लूका के बीच एक रोचक अन्तर यह है कि पहाड़ी उपदेश मत्ती 5-7 में है और जिसे मैदानी उपदेश माना जाता है वह लूका 6 में है। और इसलिए इन पर चर्चाओं और वाद-विवाद का कोई अन्त नहीं है। क्या ये दोनों एक ही हैं या भिन्न हैं? मेरे विचार में दो बातें कहने की आवश्यकता है। पहली, हम जानते हैं कि हमारे पास उसका एक छोटा सा भाग है जो उस अवसर पर यीशु ने कहा था। मेरा मतलब यह है कि आप मत्ती 5-7 को पढ़ें और उसे ऊँची आवाज में पढ़ने में संभवतः चालीस मिनट का समय लगता है। यीशु कई घण्टों तक सिखाता रहता है और उसकी शिक्षाओं को इतना दबाया नहीं जा सकता है। इसलिए हमारे पास केवल छोटा सा भाग है। क्या हम समान भागों के बारे में बात कर रहे हैं? मेरे विचार में शायद हाँ। दूसरी बात यह है कि यदि आप उस क्षेत्र के भूगोल को जानते हैं तो कफरनहूम के ठीक पीछे पहाड़ियाँ हैं और आप उन पहाड़ियों को देखकर कह सकते हैं कि यीशु बैठ गया और लोग एक पहाड़ी पर थे। परन्तु यदि आप इसे दूसरे अर्थ में देखते हैं तो यह ज्वालामुखी चट्टानों की ढ़लान है जो तीन हजार फीट ऊपर से नीचे समुद्रतल की ओर आती हैं। और जब आप दूर से इसे देखते हैं तो इसमें ऐसी बहुत सारी जगह है जिसे मैदानी कह सकते हैं। वे ढ़लान पर हैं और वे एक पहाड़ी पर हैं। मैं अपना केक लेकर खाऊँगा। मैं कहूँगा पहाड़ी उपदेश, यीशु एक पहाड़ पर बैठा है और मैदानी उपदेश, दोनों एक ही बातें हैं क्योंकि वही एक मैदानी जगह है। और मेरे विचार में यहाँ एक अन्तिम बात है जो रोचक है- लूका हमें यह दिखाना चाहता है कि यीशु के पास पहुँचा जा सकता है इसलिए वह कहता है कि यीशु मैदान में है, वह हमारे साथ है। मत्ती हमें यह दिखाना चाहता है कि यीशु के पास अधिकार है, यीशु पहाड़ पर है जैसे मूसा सीनै पहाड़ पर था। और मेरे विचार में हमारे पास दोनों उत्तर हो सकते हैं।
>
> डॉ. पीटर वॉकर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मैदानी उपदेश में यीशु ने उसी महान उलटाव पर बल दिया जिसकी यशायाह ने घोषणा की थी। कंगाल धन्य होंगे। भूखे तृप्त किए जाएँगे। जो विलाप करते हैं वे हँसेंगे। और परमेश्वर असहायों को आशीष देगा। परन्तु शुभ सन्देश एक और कदम आगे गया। यीशु ने आशीष पाने वालों को अपने पीछे चलने और परमेश्वर के राज्य के मानकों एवं मूल्यों के अनुसार जीने के लिए बुलाया जो प्रायः सांसारिक मानकों से बहुत अलग होते हैं। उदाहरण के लिए, उसने उन्हें अजनबियों और यहाँ तक कि शत्रुओं से भी प्रेम करने के लिए बुलाया जबकि सांसारिक मूल्य इसके विपरीत है जो हमें अजनबियों से सावधान रहने और शत्रुओं से घृणा करने के लिए कहते हैं। अतः, राज्य का सन्देश केवल आशीष का ही नहीं परन्तु नैतिक जिम्मेदारी का भी है।

मैदानी उपदेश के बाद लूका ने इसके कुछ और प्रमाणों के साथ इस भाग को समाप्त किया कि यीशु यशायाह की भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहा था। लूका 7:1-10 में यीशु ने एक सूबेदार के दास को चंगा किया। और 7:11-16 में उसने नाइन नगर की एक विधव के मृत पुत्र को जीवन दिया।

गलील में यीशु की सेवकाई में से लूका के अगले अभिलेख लूका 7:18-50 में कहानियों का एक समूह है जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में हैं।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गिरफ्तारी के बाद उसने अपने कुछ चेलों को यीशु के पास यह पूछने के लिए भेजा कि क्या वह वास्तव में मसीहा था। और यीशु ने जो किया था उसे स्मरण दिलाने के द्वारा उन्हें उत्तर दिया। यीशु के चमत्कारों और प्रचार ने स्पष्टतः यशायाह 61:1-2 की भविष्यद्वाणियों को पूरा किया और उन्होंने यह साबित किया कि यीशु वास्तव में मसीहा था। सुने लूका 7:22 में यीशु ने यूहन्ना के दूतों को क्या उत्तर दिया:

> जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे देखते हैं, लँगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। (लूका 7:22)

फिर यीशु ने यह पुष्टि की कि यूहन्ना भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान था। परन्तु यूहन्ना भी परमेश्वर के राज्य में सबसे छोटे व्यक्ति के बराबर नहीं था। और लूका ने 7:47-50 में यह समझाते हुए इस बिन्दू को विराम दिया कि यीशु ने वास्तव में अपने पैर धोने वाली अनैतिक स्त्री का पाप क्षमा कर दिया। यूहन्ना ने परमेश्वर से क्षमा पाने के लिए लोगों को मन फिराव का बपतिस्मा दिया था परन्तु यीशु पापियों को क्षमा करने, बीमारों को चंगा करने और कंगालों को सुसमाचार सुनाने के द्वारा परमेश्वर के राज्य को लोगों के वर्तमान अनुभव में लाया।

यूहन्ना से संबंधित कहानियों के बाद लूका 8:1-56 में लूका ने यीशु के उपदेश और चमत्कारों के बारे में और अधिक जानकारी दी।

उपदेश और चमत्कार

इन अतिरिक्त उपदेशों और चमत्कारों में यीशु ने राज्य के शुभ सन्देश पर ध्यान केन्द्रित किया। लूका 8:1-15 में बीज बोने वाले का दृष्टान्त और लूका 8:16-18 में दीवट के दृष्टान्त ने विश्वास और आज्ञापालन में राज्य के सन्देश का प्रत्युत्तर देने के महत्व का वर्णन किया। और इन्हीं विषयों को उसने लूका 8:19-21 में दोहराया जब उसने कहा कि उसके सच्चे पारिवारिक सदस्य वे हैं जो परमेश्वर के वचन को सुनते और मानते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

फिर लूका 8:22-56 में लूका ने कई चमत्कारों की जानकारी दी जिन्होंने यीशु द्वारा लाए गए उद्धार की पुष्टि और उसका प्रदर्शन कियाः यीशु ने तूफान को शान्त किया, दुष्टात्मा को निकाला, एक बीमार स्त्री को चंगा किया, और एक मृत लड़की को जीवित किया।

अन्ततः, लूका 9:1-50 में यीशु द्वारा सेवकाई के लिए बारह प्रेरितों को तैयार करने की जानकारी देने के साथ लूका गलील में यीशु की सेवकाई के अपने विवरण को समाप्त करता है।

बारह प्रेरितों की तैयारी

पहले लूका 9:1-9 में यीशु ने अपने बारह प्रेरितों को बीमारों को चंगा करने और सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा। ये वही लोग थे जिन्हें उसने लूका 6 में अलग किया था। फिर उसने 9:10-17 में 5,000 लोगों को तृप्त करने के द्वारा अपनी सामर्थ का प्रदर्शन किया और अपने प्रेरितों को उसकी सामर्थ और उसके प्रबन्ध पर भरोसा रखना सिखाया। और ये तैयारियाँ लूका 9:18-27 में पूरी हुई जहाँ प्रेरितों ने यह अंगीकार किया कि यीशु ही चिर-प्रतीक्षित मसीहा है।

लूका ने यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को सेवकाई के लिए, विशेषतः स्वर्गारोहण के बाद की सेवकाई के लिए निरन्तर तैयार करने से संबंधित कई कहानियों के द्वारा इस भाग को समाप्त किया। लूका 9:28-36 में पतरस, याकूब और यूहन्ना के सामने यीशु का रूपान्तरण हुआ जहाँ यीशु के प्रति उनके समर्पण की पुष्टि करने के लिए स्वर्ग से पिता की वाणी सुनाई दी। फिर 9:37-45 में यीशु ने एक बहुत ही कठिन दुष्टात्मा को निकाला और 9:46-50 में राज्य में महानता के बारे में सिखाया। इन सारे विवरणों में यीशु ने अपने चेलों को उसके अधिकार को पहचानने, उसकी सामर्थ पर भरोसा रखने और उसके नाम में नम्र दासों के रूप में सेवा करने के लिए तैयार किया ताकि वे पृथ्वी पर उसके राज्य के प्रभावशाली अगुवे बन सकें।

गलील में यीशु की सेवकाई के बाद लूका के सुसमाचार का अगला मुख्य भाग यीशु की यरूशलेम यात्रा का वर्णन करता है। यह भाग लूका 9:51-19:27 तक है।

यीशु की यरूशलेम यात्रा

लूका ने इस भाग में पाँच बारः 9:51; 13:22; 17:11; 18:31 और 19:28 में यरूशलेम जाने के बारे में यीशु के दृढ़ निश्चय का वर्णन किया। एक उदाहरण के रूप में लूका 18:31-33 को देखें :

> फिर उस ने बारहों को साथ लेकर उन से कहा; देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के लिए भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखी गई हैं वे सब पूरी होंगी। क्योंकि वह अन्यजातियों के हाथ में सौंपा जाएगा, और वे उसे ठट्ठों में उड़ाएँगे; और उसका अपमान करेंगे, और उस पर थूकेंगे; और उसे कोड़े मारेंगे; और घात करेंगे। **(लूका 18:31-33)**

इस प्रकार के परिच्छेदों के द्वारा लूका ने यह स्पष्ट किया कि यीशु अपने लोगों को उद्धार देने की परमेश्वर की योजना के प्रति समर्पित था यद्यपि इसके लिए यरूशलेम में उसका मरना आवश्यक था।

यीशु की यरूशलेम यात्रा की लूका की चर्चा को हम चार मुख्य भागों में विभाजित करेंगेः पहला, शिष्यता की प्रकृति पर यीशु की शिक्षा; दूसरा, यीशु और उसके विरोधियों के बीच बढ़ते संघर्ष के बारे में लूका की सूचना; तीसरा, शिष्यता के मूल्य पर यीशु की शिक्षा; और चौथा, अपने लोगों को उद्धार देने की परमेश्वर की योजना के प्रति यीशु का समर्पण। आइए हम लूका 9:51-11:13 में शिष्यता की प्रकृति से आरम्भ करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शिष्यता की प्रकृति

परमेश्वर के राज्य को बनाने और उसके लोगों को उद्धार देने के प्रति समर्पण के कारण यीशु ने अपने कुछ विशेष प्रेरितों को सेवकरुपी अगुवाई के लिए चुना और तैयार किया। लूका 9:51-10:24 में उसने उन्हें सुसमाचार प्रचार करना सिखाया और चेतावनी दी कि जीवन उनके लिए कठिन होगा। परन्तु उसने उन्हें पवित्र आत्मा से सामर्थ भी दी। इस तैयारी के बाद उसने उन्हें उन नगरों में प्रचार के लिए भेजा जिनमें वह जाने वाला था।

इसके बाद लूका 10:25-11:13 में यीशु ने उन्हें शिष्यता से संबंधित तीन बिन्दुओं- पड़ोसी के प्रति प्रेम, परमेश्वर के प्रति प्रेम, और प्रार्थना के बारे में सिखाने के द्वारा उन्हें एक विस्तृत दृष्टिकोण प्रदान किया।

यीशु ने लूका 10:27 में प्रेम के बारे में अपनी शिक्षा को इस प्रकार संक्षेप में बताते हुए आरम्भ किया :

> “उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।” (लूका 10:27)

यीशु ने यह समझाने के लिए व्यवस्थाविवरण 6:5 और लैव्यवस्था 19:18 का उल्लेख किया कि पुराने नियम की सम्पूर्ण व्यवस्था हमें परमेश्वर और हमारे पड़ोसी से प्रेम करने के बारे में सिखाती है।

अगले दो परिच्छेद प्रेम की इस व्यवस्था के दो भागों को समझाते हैं। लूका 10:29-37 में “अच्छे सामरी” का दृष्टान्त पड़ोसी से प्रेम करने के बारे में समझाता है। यह एक सामरी के बारे में विख्यात कहानी है जिसने एक घायल यहूदी के प्रति पड़ोसी का प्रेम दिखाया यद्यपि उन दोनों के समूहों के बीच तनाव था। फिर लूका 10:38-42 में मरियम से यीशु की भेंट परमेश्वर से प्रेम करने का उदाहरण दिखाती है। यीशु के चरणों पर बैठकर उसके उपदेशों को सुनने के द्वारा मरियम ने दिखाया कि हमें हमारे जीवनों में परमेश्वर को पहली प्राथमिकता देने और आज्ञापालन में उसकी सुनने के द्वारा उससे प्रेम करना चाहिए।

अन्त में, लूका 11:1-13 में प्रार्थना पर उपदेश में परमेश्वर के राज्य के वरदानों और आशीषों के लिए ईमानदारी और सतत् रूप से प्रार्थना करने के बारे में सिखाने के द्वारा यीशु ने प्रेरितों के लिए अपने निर्देश को समाप्त किया।

> प्रार्थना मसीही व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह यीशु के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग थी और उसके जीवन के उदाहरण के द्वारा हम इसके महत्व को देख सकते हैं। हम देखते हैं कि उस पर काम का बोझ जितना अधिक था उसने उतनी ही अधिक प्रार्थना की और विश्राम के समय परमेश्वर के बल की खोज की। उसे यह अहसास था कि आत्मिक ताजगी पाने के लिए पिता के साथ निरन्तर संगति आवश्यक है। बारह चेलों को चुनने से पहले उसने पूरी रात प्रार्थना की और उसे पता था कि उनमें से एक उसे पकड़वाएगा। वास्तव में जब उसने अपने चेलों को चुना तो वह आगे अपने क्रूस की ओर देख रहा था। और यही कारण है कि इस अत्यधिक महत्वपूर्ण सेवकाई को करने से पहले यीशु ने पूरी रात प्रार्थना में व्यतीत की। यीशु का प्रार्थना जीवन हमारे लिए एक उदाहरण है। बाद में जब उसके चेले अपने आश्चर्यजनक कार्यों के कारण आनन्द के साथ उसके पास लौटते हैं तो यीशु ने यह कहते हुए पिता की स्तुति की, “हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तू ने इन बातों को बुद्धिमानों और समझदारों से छिपा रखा और उन्हें बालकों पर प्रकट किया है।” यीशु ने पिता की स्तुति की तो हमें भी उसकी स्तुति करनी चाहिए। यदि यीशु को प्रार्थना करने और

स्तुति करने की आवश्यकता थी तो हमें उससे भी अधिक आवश्यकता है। गिरफ्तारी से पहले उसने गतसमनी के बाग में सच्चाई से प्रार्थना की और अन्त में कहा, "हे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से दूर कर। फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।" हम देखते हैं कि यीशु पूरी तरह से अपने पिता के अधीन था। यीशु ने पिता के साथ अपने संबंध के कारण प्रार्थना की और वह मानवता के लिए उद्धार की योजना को पूरा करना चाहता था। उसका उदाहरण हमें सिखाता है कि परमेश्वर की सन्तानों के रूप में हमारी प्रार्थना और पिता की इच्छा को मानना हमारे जीवनों के लिए निर्णायक है।

डॉ. पीटर चौ, अनुवाद

मेरे विचार में मसीहियों के लिए प्रार्थना के महत्वपूर्ण होने का मुख्य कारण यह है कि जब भी हम प्रार्थना करते हैं तो वह मसीह में हमारे विश्वास और सुसमाचार पर हमारे भरोसे की अभिव्यक्ति है। हमारे प्रार्थना कर पाने का एकमात्र कारण यह है कि यीशु हमारे पापों के लिए मरा; यीशु ने हमें पिता के सिंहासन तक पहुँच प्रदान की। हम प्रार्थना में निश्चय के और साहस के साथ परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के निकट आ सकते हैं क्योंकि यीशु ने हमारे लिए वहाँ जाने का मार्ग तैयार कर दिया है। और इसलिए प्रार्थना करने का पहला कारण यह है कि यह सुसमाचार का एक अभ्यास है। हमारे प्रार्थना करने का दूसरा कारण यह है कि यह हर बात के लिए निरन्तर परमेश्वर पर निर्भरता की अभिव्यक्ति है। हम हमारे पिता के रूप में हमारी दैनिक रोटी माँगते हुए उसके पास आते हैं जो अपने बच्चों को आशीष देना चाहता है। परन्तु यह परमेश्वर की आराधना करने का भी एक तरीका है, हम उसके महत्व को अभिव्यक्त करते हैं, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, हम उसके साथ संगति करते हैं। बाइबल निरन्तर प्रार्थना में रहने की वास्तविकता के बारे में बात करती है जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति के दैनिक अनुभव के साथ हम चलते-फिरते हैं, और यह समझते हैं कि वह परमेश्वर है और उसका हमारे जीवनों में महत्व है।

डॉ. के. एरिक थोनेस

जॉन वेस्ली ने प्रार्थना को परमेश्वर के निकट आने का बड़ा माध्यम, अनुग्रह का मुख्य माध्यम कहा। वास्तव में, जब आप मसीहियत के इतिहास को देखते हैं तो पवित्रशास्त्र को पढ़ना और प्रार्थना करना दो मुख्य आत्मिक कार्य हैं। मेरे विचार में प्रार्थना का इतना महत्वपूर्ण होने का कारण यह है कि यह परमेश्वर के साथ ठीक उसी प्रकार का संबंध बनाती है जैसा मसीहियत से अपेक्षित है। जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम परमेश्वर से बात करते हैं, यह सुनते हैं कि परमेश्वर हम से क्या कहना चाहता है और फिर जो सुनते हैं उसका प्रत्युत्तर देते हैं। और यही संबंध का आधार है। और यही वास्तव में परमेश्वर हमारे लिए चाहता है कि हम संबंध रखें। आप उत्पत्ति में जाएँ जहाँ वास्तव में परमेश्वर वाटिका में चलता है और संगति के लिए आदम और हव्वा को खोजता है। प्रार्थना हमारे लिए परमेश्वर के साथ चलने और बात करने का तरीका बन जाती है। वह पुराना भजन, "वह मेरे साथ चलता है और मेरे साथ बात करता है और मुझे बताता है कि मैं उसका

हूँ।" मेरा मतलब यह है कि जब आप प्रार्थना करते हैं तो आप उसके केन्द्र में पहुँचते हैं जो मसीहियत से अपेक्षित है क्योंकि यह संबंध पर आधारित है।

डॉ. स्टीव हार्पर

शिष्यता की प्रकृति पर यीशु की शिक्षा के बाद लूका 11:14-15:32 में लूका ने यीशु और यहूदी अगुवों के बीच बढ़ते हुए संघर्ष पर बल दिया।

बढ़ता हुआ संघर्ष

अपनी यात्रा के इस भाग के दौरान यीशु ने कम से कम तीन कारणों से जान-बूझकर यहूदी अगुवों से शत्रुता ली। पहला, वह उनके द्वारा परमेश्वर के लोगों के खराब नेतृत्व पर उन्हें डाँटना चाहता था। दूसरा, वह लोगों को अपने स्वयं के राज्य में बुलाना चाहता था। और तीसरा, वह चाहता था कि वे उसे यरूशलेम में क्रूस पर चढ़ाएँ ताकि वह अपने लोगों के उद्धार के लिए उनके पापों का प्रायश्चित करे और उन पर राज्य करने का प्रतिफल प्राप्त करे।

उदाहरण के लिए, लूका 11:14-28 में यहूदियों ने दावा किया कि यीशु "दुष्टात्माओं का प्रधान" है। और यीशु ने पद 29-53 में उनकी दुष्टता के लिए उन्हें दोषी ठहराते हुए और उन पर हाय कहते हुए उन्हें उत्तर दिया।

लूका 12:1-3 में यीशु ने लोगों को फरीसियों के समान पाखण्डी न बनने की चेतावनी दी। पद 4-21 में उसने यहूदी आराधनालयों, हाकिमों और अधिकारियों की रीतियों पर आक्रमण किया। पद 22-32 में उसने बल दिया कि परमेश्वर के राज्य की खोज करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं को परमेश्वर पूरा करेगा। इसलिए उन्हें यहूदी नेतृत्व के समान सांसारिक धन का पीछा करने की आवश्यकता नहीं है। और पद 33-59 में यीशु ने चेतावनी दी कि उसके अनुयायियों का निश्चित रूप से उन लोगों से संघर्ष होगा जो परमेश्वर के राज्य को नहीं अपनाते हैं।

लूका 13:1-9 में पूरे इस्राएल को अपने पापों से मन फिराने के लिए बुलाने के द्वारा यीशु यहूदी नेतृत्व की शत्रुता मोल लेता रहा। फिर पद 10-17 में उसने सब्त के दिन एक कुबड़ी स्त्री को चंगा करके संघर्ष को बढ़ावा दिया जिससे आराधनालय का सरदार अत्यधिक क्रोधित हो गया। और पद 18-30 में यीशु ने स्पष्टता से यहूदी नेतृत्व और उनके अनुयायियों पर निशाना साधते हुए सिखाया कि ऐसे बहुत से लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे जिन्होंने सोचा था कि उन्हें प्रवेश मिल जाएगा। अन्ततः, पद 31-35 में लूका ने बताया कि यीशु और यहूदी राजा हेरोदेस के बीच तनाव बढ़ रहा था और वह यीशु को मारने की योजना बना रहा था।

लूका 14 में यीशु ने यहूदी नेतृत्व को और अधिक भड़काया। पद 1-24 में उसने सब्त के दिन एक व्यक्ति को चंगा किया और फिर यहूदी अगुवों के सांसारिक मूल्यों की आलोचना करते हुए यहाँ तक संकेत दिया कि उनमें से एक भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा। फिर पद 25-34 में यीशु ने अपने अनुयायियों को चेतावनी दी कि उसका विरोध करने वालों से संघर्ष के फलस्वरूप उन्हें इस जीवन में सब कुछ खोना पड़ सकता है।

15:1-2 में एक परिचय के बाद यीशु ने फिर फिर से खोई हुई वस्तुओं : खोई हुई भेड़, खोया हुआ सिक्का, और खोए हुए पुत्र के अपने दृष्टान्तों के द्वारा यहूदी अगुवों के साथ अपने संघर्ष को बढ़ावा दिया। प्रत्येक कहानी में यीशु ने अपने लोगों को फरीसियों और व्यवस्थापकों के कपटी एकाधिकार को अस्वीकार करने और उस समय आनन्दित होने के लिए बुलाया जब संसार के खोए हुए पापियों के बीच परमेश्वर अपनी सन्तानों को पाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शिष्यता की प्रकृति पर यीशु के उपदेश और यहूदी अगुवों के साथ उसके बढ़ते हुए टकराव की जानकारी देने के बाद लूका 16:1-18:30 में यीशु की यरूशलेम यात्रा के विवरण में लूका ने शिष्यता के मूल्य पर ध्यान केन्द्रित किया।

शिष्यता का मूल्य

यीशु अपने अनुयायियों को यह समझाना चाहता था कि उसके राज्य में उनके स्वयं के जीवनों का प्रारूप भी उसके जीवन के समान ही होगा। उन्हें सांसारिक अगुवों द्वारा सताया जाएगा और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उन्हें जूझना होगा। 16:1-17:10 में यीशु ने सिखाया कि शिष्यता में हमारी सारी संपत्ति को परमेश्वर की संपत्ति के रूप में देखना शामिल है जिसे उसने भण्डारियों के रूप हमें सौंपा है ताकि उसका प्रयोग पूरी तरह से उसके उद्देश्यों के लिए किया जाए। उसने यह चेतावनी भी दी कि सांसारिक आशीषें ठोकर का कारण बन सकती हैं, धनवानों को सच्चे सुसमाचार को पहचानने और स्वीकार करने से भी रोक सकती हैं। अन्ततः, उसने विश्वास और मन फिराव का प्रोत्साहन देते हुए कहा कि चाहे हम कितनी भी भलाई क्यों न करें, हमारा सर्वोत्तम भी परमेश्वर की माँगों से बढ़कर नहीं है।

17:11-18:8 में यीशु ने इस संसार के अन्तिम न्याय पर ध्यान केन्द्रित किया। इस संसार में हमें मिलने वाले स्वास्थ्य, संपत्तियों और न्याय जैसी अच्छी बातों के द्वारा हमें परमेश्वर की भलाई को देखना चाहिए और हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि वह इस जीवन में हमें उन बातों की आशीष दे। परन्तु फिर भी अन्तिम न्याय के समय उनकी नियति नाश होना है। सच्ची संपत्ति, स्वास्थ्य, और न्याय केवल परमेश्वर के अनन्त राज्य में प्रतिफल के रूप में मिलते हैं; इसलिए हमारी आशा उसी पर होनी चाहिए।

इन विचारों के अनुरूप यीशु ने मानवता की आवश्यकता पर बल देते हुए लूका 18:9-30 में इस भाग को समाप्त किया क्योंकि केवल नम्र लोग ही परमेश्वर की क्षमा और आशीष को प्राप्त करेंगे और अनन्त जीवन के वारिस बनेंगे।

लूका ने अपने लोगों को बचाने की परमेश्वर की योजना के प्रति यीशु के समर्पण पर बल देते हुए लूका 18:31-19:27 में यीशु की यरूशलेम यात्रा के अपने विवरण को समाप्त किया।

यीशु का समर्पण

यीशु ने लूका 18:31-34 में अपनी स्वयं की मृत्यु की भविष्यद्वाणी करके परमेश्वर की योजना के प्रति अपने समर्पण को दिखाया। यीशु जानता था कि अपने लोगों को उद्धार देने के लिए उसका मरना आवश्यक है और अपने पिता की योजना को पूरा करने के लिए वह दृढ़ संकल्पी था।

इसके बाद यीशु ने उन लोगों को आशीष देने के द्वारा परमेश्वर की उद्धार की योजना के प्रति अपने समर्पण का प्रदर्शन किया जिन्हें उद्धार देने के लिए वह आया था जैसे कि वह अन्धा व्यक्ति जिसे यीशु ने लूका 18:35-43 में चंगा किया और चुंगी लेने वाला जक्कई जिसे उसने लूका 19:1-10 में बुलाया। ये लोग समाज द्वारा त्यागे हुए थे। परन्तु यशायाह 61:1-2 की प्रतिज्ञाओं के अनुरूप परमेश्वर के राज्य में उन्हें बड़ा प्रतिफल मिलने वाला था। जैसे यीशु ने लूका 19:9-10 में जक्कई के बारे में कहा था-

> तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उन का उद्धार करने आया है। (लूका 19:9-10)

अन्ततः लूका 19:11-27 में यीशु ने राजा के सेवकों का दृष्टान्त बताया जिन्हें राजा ने यात्रा पर जाने से पहले धन सौंपा था। इस दृष्टान्त ने दिखाया कि यदि हम परमेश्वर के राज्य के वारिस बनना चाहते हैं तो हमें भी परमेश्वर की योजना के प्रति यीशु के समान ही समर्पित होना पड़ेगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यीशु की यरूशलेम यात्रा का वर्णन करने के बाद लूका ने यरूशलेम में यीशु की सेवकाई की जानकारी दी। यह लूका के सुसमाचार का पाँचवाँ मुख्य भाग है और यह 19:28-21:38 तक है।

यरूशलेम और उसके आस-पास यीशु की सेवकाई

यरूशलेम में यीशु की सेवकाई के बारे में लूका के विवरण का आरम्भ लूका 19:28-44 में यीशु के यरूशलेम में प्रवेश करने के साथ होता है जब भीड़ ने जय-जयकार और स्तुति के साथ उसका स्वागत किया।

यरूशलेम में प्रवेश के बाद यीशु का पहला कार्य बेचने वालों को बाहर खदेड़ने के द्वारा मन्दिर को शुद्ध करना था। यह घटना लूका 19:45-46 में बताई गई है। इस शुद्धिकरण ने यहूदी आराधना और जीवन को भ्रष्ट करने वाली पापी रीतियों की भर्त्सना की और इससे यहूदी नेतृत्व का अत्यधिक अपमान हुआ।

> जिस प्रकार नए नियम की बहुत-सी शिक्षाओं को समझने के लिए हमें उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार यीशु द्वारा मन्दिर के शुद्धिकरण की घटनाओं को समझने के लिए हमें पुराने नियम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने की आवश्यकता है। हमें पुनः पुराने नियम को पढ़ने की आवश्यकता है। राजाओं की पहली पुस्तक के अध्याय 8 में मन्दिर के समर्पण के बारे में बताया गया है। मन्दिर कई वर्षों तक निर्माणाधीन था। जब वह पूरा हुआ तो राजा सुलैमान और इस्राएली उसका समर्पण करने के लिए आए। राजा सुलैमान ने यहोवा से प्रार्थना की, "तू अपने दास और अपनी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना जिसे वे इस स्थान की ओर गिड़गिड़ाकर करें उसे सुनना, वरन् स्वर्ग में से जो तेरा निवासस्थान है, सुन लेना और सुनकर क्षमा करना।" इसके अतिरिक्त सुलैमान ने यह प्रार्थना भी की कि जब कोई परदेशी भी तेरा नाम सुनकर दूर देश से आए, वह तो तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुआ भुजा का समाचार पाए; इसलिए जब ऐसा कोई आकर इस भवन की ओर प्रार्थना करे तब तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुन, और जिस बात के लिए ऐसा परदेशी तुझे पुकारे उसी के अनुसार व्यवहार करना जिससे पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं तेरा भय मानें और निश्चय जानें कि यह भवन जिसे मैं ने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है। अतः, जब यीशु के समय में धार्मिक अधिकारियों ने मन्दिर को डाकुओं की खोह बना दिया तो उससे परमेश्वर के नाम का अपमान हुआ क्योंकि मन्दिर परमेश्वर के नाम से जुड़ा है। इसके अतिरिक्त, जब यीशु ने मन्दिर को शुद्ध किया तो उसका एक प्रतीकात्मक अर्थ था। मन्दिर यीशु की ओर संकेत करता था क्योंकि वही सच्चा और अन्तिम मन्दिर है। प्रार्थना के लिए आने वाली सारी जातियों के लिए यीशु ही मन्दिर की वास्तविकता है क्योंकि हम यीशु के नाम में हमारे पिता से प्रार्थना करते हैं। अतः,यदि हम पुराने नियम से मन्दिर के बारे में समझते हैं तो यीशु द्वारा उसके शुद्धिकरण के महत्व और परमेश्वर के राज्य के आगमन से उसके संबंध को देख सकते हैं।
>
> डॉ. पीटर चौ, अनुवाद

> ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु मन्दिर के उस क्षेत्र, गैरयहूदियों के आँगन के बारे में सबसे अधिक परेशान है जहाँ वे आ सकते हैं और ब्रह्माण्ड के रचयिता की उपस्थिति में रह सकते हैं, वहाँ गैरयहूदी आ सकते हैं। वे मन्दिर के अंदरूनी भाग

> में नहीं जा सकते जो केवल यहूदियों के लिए है परन्तु बाहरी आँगन जातियों के लिए, गैरयहूदियों के लिए है। वे वहाँ आ सकते हैं और प्रार्थना कर सकते हैं। और हम देखते हैं कि वहाँ प्रार्थना करने के लिए कोई स्थान नहीं है। उस स्थान के वास्तविक उद्देश्य के अर्थ में गैरयहूदियों के लिए कोई स्थान नहीं है। और इसीलिए हम देखते हैं कि यीशु मन्दिर को पुरानी अवस्था में लाता है, उस स्थान को शुद्ध करने के द्वारा इस योग्य बनाता है कि गैरयहूदी वहाँ आ सकें और प्रार्थना कर सकें।
>
> डॉ. ग्रेग पैरी

लूका 19:47-21:38 के अनुसार यीशु ने अगले कई दिन मन्दिर के आँगनों में उपदेश देते हुए और परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करते हुए व्यतीत किए। इस समय के दौरान, जब उसने यहूदी अगुवों की रीतियों की भर्त्सना करना और उनके अधिकार को चुनौती देना जारी रखा तो यहूदी अधिकारियों से उसका टकराव बढ़ गया। देखें लूका 20:20 में व्यवस्थापकों और महायाजकों ने क्या किया :

> वे उस की ताक में लगे और भेदिए भेजे कि धर्म का भेष धरकर उस की कोई न कोई बात पकड़ें, कि उसे हाकिम के हाथ और अधिकार में सौंप दें। (लूका 20:20)

परन्तु दुष्ट लोगों द्वारा फँसाने का प्रयास करने पर भी यीशु ने सत्य का प्रचार करना बन्द नहीं किया। इसके विपरीत, उसने खुलकर उन्हें झिड़का। और लूका 20:46-47 में भीड़ से कहा :

> शास्त्रियों से चौकस रहो, जिनको लम्बे-लम्बे वस्त्र पहने हुए फिरना भाता है, और जिन्हें बाजारों में नमस्कार, और सभाओं में मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य स्थान प्रिय लगते हैं। वे विधवाओं के घर खा जाते हैं, और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं: ये बहुत ही दण्ड पाएँगे। (लूका 20:46-47)

यरूशलेम के निकट पहुँचने पर इस्राएल द्वारा उन्हें उद्धार देने वाले मसीहा के रूप में उसे स्वीकार न करने के कारण यीशु ने नगर के विनाश की भविष्यद्वाणी की। परन्तु यह विपदा भी बड़े दण्ड का केवल एक स्वाद मात्र होगी। अन्तिम दिन जब यीशु अपनी महिमा में आएगा तो हर एक व्यक्ति उसके सामने अपना लेखा देगा। और इसीलिए यीशु हर युग में अपने चेलों को बुलाता है कि वे पूरे दिल से उसकी आज्ञा मानें और सावधानी से उसके पुनरागमन की प्रतीक्षा में रहें।

यरूशलेम में यीशु की सेवकाई की सूचना देने के बाद हम लूका के सुसमाचार के अन्तिम प्रमुख भाग : लूका 22:1-24:53 में यरूशलेम के बाहर यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरूत्थान के विवरण को देखते हैं।

यीशु की क्रूस की मृत्यु और पुनरूत्थान

अपने सुसमाचार के इस भाग में लूका समझाता है कि यीशु ने अपने लोगों के उद्धार का कार्य वास्तव में कैसे पूरा किया। उसने स्वयं को प्रायश्चित के एक बलिदान के रूप में चढ़ाने के द्वारा अपने स्वर्गीय पिता की योजना को पूरा किया। और उसे प्रतिफल में उसके पिता दाऊद का सिंहासन दिया गया और इसलिए अब वह अपने लोगों के राजा के रूप में राज्य कर रहा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यीशु की क्रूस की मृत्यु और पुनरूत्थान के लूका के वर्णन को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है : यीशु की गिरफ्तारी, मुकद्दमा और मृत्यु तथा उसका पुनरूत्थान और स्वर्गारोहरण। आइए पहले हम लूका 22:1-23:56 में यीशु की गिरफ्तारी, मुकद्दमे और मृत्यु को देखते हैं।

गिरफ्तारी, मुकद्दमा, और मृत्यु

यीशु की गिरफ्तारी, मुकद्दमे और मृत्यु का विवरण लूका 22:1-6 में यीशु को पकड़वाने के षड़यंत्र के साथ आरम्भ होता है। फिर पद 7-38 में वर्णित अन्तिम भोज के दौरान यीशु ने यहूदा के विश्वासघात के साथ इस बात की भी भविष्यद्वाणी की कि पतरस इससे इनकार करेगा कि वह यीशु का चेला है। परन्तु इन निराशापूर्ण भविष्यद्वाणियों के बीच उसने चेलों को अपने राज्य में उनके स्थान और इन घटनाओं पर उसके नियंत्रण का आश्वासन दिया।

अन्तिम भोज के बाद लूका 22:39-46 में हम जैतून के पहाड़ पर यीशु की प्रार्थना को देखते हैं। इस प्रार्थना के दौरान यीशु बड़ी पीड़ा में था जिसे हम इस तथ्य में देख सकते हैं कि उसके पसीने में लहू निकल रहा था और वह इच्छा यह थी कि यदि संभव हो तो पिता किसी न किसी तरह उसे इस क्रूस की मृत्यु को टालने की अनुमति दे दे। परन्तु इन सबके बीच यीशु स्वर्गीय पिता पर अपने दृढ़ विश्वास या पिता की योजना के प्रति अपने समर्पण में कभी लड़खड़ाया नहीं।

लूका 22:47-53 में यीशु की गिरफ्तारी के बाद पद 54-62 में पतरस इनकार करता है और 22:63-23:25 में यहूदी हाकिमों, पीलातुस और हेरोदेस के सामने यीशु का मुकद्दमा चलता है। हेरोदेस और पीलातुस दोनों ने यीशु को रोम के विरूद्ध किसी भी ऐसे अपराध से निर्दोष पाया जो मृत्युदण्ड के योग्य हो। परन्तु, पीलातुस ने यहूदी अगुवों और भीड़ के दबाव में आकर निर्दोष यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

> सुसमाचारों को पढ़ते समय लोग प्रायः यीशु के मुकद्दमे और मृत्यु के संबंध में भीड़ के प्रत्युत्तर के बारे में दुविधा में पड़ जाते हैं जब वह भीड़ और पीलातुस के सामने खड़ा होता है तो भीड़ चिल्लाकर यीशु की मृत्यु और बरअब्बा की मुक्ति माँगती है। इसका एक उत्तर यह है कि हमें मानवीय पाप की गहराइयों का ध्यान रखना है कि लोग बहुत ही पापी हैं और हमारे अन्दर अन्याय करने की प्रवृत्ति है। हम भीड़ की भावुकता में बह जाते हैं और केवल इस कारण गलत कर बैठते हैं क्योंकि उस समय हमें यह प्रतीत होता है कि यही बात हमें सर्वाधिक आरामदायक या लोकप्रिय बनाएगी या हम बस बह जाते हैं और गलत कर बैठते हैं। और मुझे लगता है कि यीशु के मुकद्दमे में संभवतः इसका एक कारण था। मेरे विचार में ध्यान रखने की एक और बात यह है कि वहाँ जो भीड़ एकत्रित थी वह संभवतः ऐसे लोगों की भीड़ थी जो पहले ही फरीसियों के साथ सहमत थे और यीशु के घोर विरोधी थे। यीशु से डरने वाले महायाजकों को यह डर था कि कहीं रोमी आकर उनका अधिकार न छीन लें; यदि उन्होंने यीशु का कुछ नहीं किया तो वे रोमी अधिकारियों के सामने राजनैतिक समस्या में फँस जाएँगे। अतः एक ओर आप उनके कायरता से भरे कार्य को देखते हैं। आप फरीसियों के भटके हुए कार्यों को देखते हैं जो कायर लोग नहीं थे परन्तु यीशु का विरोध करने में वे धर्मविज्ञानी रूप से भटक गए थे और इस कारण वे उससे छुटकारा पाना चाहते थे। अतः एकत्रित भीड़ में सब लोग नहीं थे परन्तु केवल चुने हुए लोगों का एक समूह था जो संभवतः यीशु का विरोध करने वालों से सहमत था। हमारे लिए यह याद रखना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि कलीसिया के आरम्भिक दिनों में सारे मसीही यहूदी थे, प्रेरित यहूदी थे, स्वयं यीशु यहूदी था और बहुत सारे ऐसे यहूदी थे जिनका यीशु के

> प्रति सकारात्मक रूख था। और उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए चिल्लाने वाले लोग संभवतः उन लोगों में से एक छोटे समूह के थे जिनसे अपनी सेवकाई के दौरान यीशु का सम्पर्क हुआ था।
>
> डॉ. फ्रैंक थिलमैन

रोचक बात यह है कि यीशु की गिरफ्तारी और मुकद्दमों के बारे में लूका का वर्णन यीशु की मृत्यु की अपेक्षा मसीह के रूप में उसकी पहचान पर केन्द्रित है। लूका 22:67-70 में यीशु और यहूदी अगुवों के बीच बातचीत को सुनें :

> उन्होंने कहा "यदि तू मसीह है, तो हम से कह दे।" उस ने उन से कहा, यदि मैं तुम से कहूँ तो प्रतीति न करोगे...परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दहिनी और बैठा रहेगा।" इस पर सब ने कहा, "तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?" उसने उन से कहा, "तुम आप ही कहते हो, क्योंकि मैं हूँ।" (लूका 22:67-70)

इस परिच्छेद में यीशु ने स्वयं को मसीह, मनुष्य के पुत्र, और परमेश्वर के पुत्र के रूप में बताया। ये सारे शब्द इस तथ्य को बताते हैं कि वह मसीहा था जिसके बारे में पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की गई थी।

मुकद्दमों के बाद लूका 23:26-49 में यीशु की क्रूस कीं मृत्यु का वर्णन है। पद 43 और 46 में लूका ने यीशु द्वारा दो बार क्रूस पर कहे गए ऐसे वचनों का उल्लेख किया जिन्हें और किसी सुसमाचार में नहीं बताया गया है। ये वचन उन दो बिन्दुओं पर बल देते हैं जिन्हें लूका ने बार-बार अपने सुसमाचार में बताया है : पहला, यीशु ने असहाय लोगों पर तरस खाया; और दूसरा, यीशु ने अपने पिता पर भरोसा रखा जिसका इन सारी घटनाओं पर नियंत्रण था। लूका 23:43 में यीशु ने अपने साथ क्रूस पर चढ़ाए गए डाकू पर तरस खाया और इन शब्दों में उसे सांत्वना दी :

> मैं तुझ से सच कहता हूँ; आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा। (लूका 23:43)

और पद 46 में यीशु ने भरोसे के साथ पिता को पुकारते हुए कहा :

> हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ। (लूका 23:46)

लूका ने स्पष्ट किया कि मृत्यु से पूर्व प्रभु के अन्तिम पल दूसरों के प्रति तरस और अपने पिता पर भरोसे से भरे हुए थे। फिर लूका 23:50-56 में लूका ने बताया कि उसकी देह को दफनाने के लिए तैयार किए बिना ही चट्टान में खुदी हुई एक कब्र में दफना दिया गया क्योंकि सब्त का दिन आने वाला था।

यह देखना कठिन नहीं है कि लूका के अत्याचार सहने वाले पाठकों ने किस प्रकार स्वयं को यीशु की पीड़ाओं से जोड़ा होगा। वे जो भी सताव सह रहे थे, यीशु ने उनसे बदतर सहन किया था। और इससे बढ़कर, यह सब उसने उनके लिए सहा था। यदि उनका प्रभु उनके लिए कष्ट सहने और मरने के लिए भी तैयार था तो निश्चित रूप से उन्हें भी उसके लिए कष्ट सहने और मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। परन्तु यह एक ऋणमात्र नहीं था। जिस प्रकार यीशु को आज्ञाकारिता और कष्ट सहने के लिए प्रतिफल दिया गया उसी प्रकार उसके आज्ञाकारी अनुयायियों को भी उनके कष्ट के लिए प्रतिफल मिलेगा।

अन्त में, यीशु की गिरफ्तारी, मुकद्दमे और मृत्यु की घटनाओं का वर्णन करने के बाद लूका 24:1-53 में यीशु के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के विवरण के साथ लूका ने अपने सुसमाचार को समाप्त किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण

24:1-12 में लूका ने यीशु की खाली कब्र, स्वर्गदूत, उसके चेलों के अविश्वास के बारे में बताया। अपनी भविष्यद्वाणी के अनुरूप यीशु मृतकों में से जी उठा था। उसने स्वयं के लिए और सब विश्वास करने वालों के लिए मृत्यु को जीत लिया था।

लूका 24:13-35 उसी दिन की कहानी को बाद में पुनः जारी रखता है जब यीशु इम्माऊस के मार्ग पर दो चेलों के साथ हो लेता है। उसने उन्हें अपनी स्वयं की सेवकाई और पुनरूत्थान के प्रकाश में पुराने नियम को पढ़ना सिखाया। बाइबल में जो कुछ भी लिखा है वह यीशु और उसके उद्धार देने वाले मिशन की ओर संकेत करता है।

फिर लूका 24:36-49 में यीशु अपने चेलों के सामने प्रकट हुआ और उन्हें इन घटनाओं की गवाही देने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने उन्हें सारी जातियों में मन फिराव और क्षमा के सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा उसके मिशन को जारी रखने के लिए कहा। फिर लूका ने उन्हें इस कार्य के लिए सामर्थ देने हेतु पवित्र आत्मा को भेजने की यीशु की प्रतिज्ञा के बारे में जानकारी देकर अपनी दूसरी पुस्तक, प्रेरितों के काम के लिए आधार तैयार किया।

लूका ने 24:50-53 में यीशु के स्वर्ग में दैहिक स्वर्गारोहण के साथ अपने सुसमाचार को समाप्त किया। इस आश्चर्यकर्म के प्रत्युत्तर में चेलों ने परमेश्वर की स्तुति और आराधना की एवं आनन्दित हुए। लूका 2:10 में स्वर्गदूत द्वारा बताया गया बड़े आनन्द का सुसमाचार अन्ततः परमेश्वर के लोगों के पास आ गया था। जीवित, विजयी प्रभु यीशु उनका उद्धारकर्ता था।

लूका ने गैरयहूदी विश्वासियों को यह भरोसा दिलाने के लिए लिखा कि यीशु के पीछे चलने में उन्होंने सही निर्णय लिया है। इस सुसमाचार की संरचना और विषय-सूची के द्वारा लूका ने दिखाया कि यीशु के जीवन का प्रत्येक पहलू परमेश्वर द्वारा अपने राज्य को स्थापित करने की योजना का हिस्सा था। वह परमेश्वर का पुत्र और दाऊद का पुत्र था जो यशायाह की उद्धार की भविष्यद्वाणियों को पूरा करने के लिए आया था। यीशु अनुग्रह और करूणा की अविरल ताकत था जो सारी जातियों को अपने शासन के अधीन लाएगा। उसने वास्तव में परमेश्वर के राज्य का उद्घाटन किया था। उसने वास्तव में मानवजाति के सारे परिवारों को उद्धार की पेशकश की थी। और वह वास्तव में उन लोगों को उद्धार देगा जो उसके प्रति विश्वासयोग्य हैं।

लूका के सुसमाचार की पृष्ठभूमि, संरचना, और विषय-सूची को देखने के बाद अब हम हमारे अन्तिम बिन्दू को देखने के लिए तैयार हैं। हमारे अध्याय के इस भाग में हम कुछ प्रमुख विषयों को देखेंगे जिन पर लूका ने बल दिया है।

मुख्य विषय

सामान्यतः हम यह कह सकते हैं कि मत्ती, मरकुस, और लूका- तीनों समदर्शी सुसमाचारों का केन्द्रीय विषय समान है : यीशु ही मसीह है जो परमेश्वर के राज्य को लाया है। परन्तु प्रत्येक सुसमाचार इस केन्द्रीय विचार को भिन्न रीति से प्रस्तुत करता है। अतः लूका में इस विचार को देखते समय हम लूका द्वारा उद्धार के रूप में परमेश्वर के राज्य के वर्णन पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

लूका ने बचाना, बचाने वाले, उद्धार और उद्धारकर्ता शब्दों का प्रयोग किसी भी अन्य सुसमाचार के लेखक से कम से कम 25 बार अधिक किया है। उसने मसीह के बिना हमारी लाचार अवस्था और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

छुटकारे की हमारी आवश्यकता पर बल दिया। और उसने सिखाया कि परमेश्वर का राज्य हमारा महानतम उद्धार है।

उद्धार शब्द पुराने नियम की मसीहारुपी आशाओं से गहराई से जुड़ा है। हम इसे बुराई की तानाशाही और पाप के विरूद्ध परमेश्वर के दण्ड से छुटकारे के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। सम्पूर्ण पुराने नियम में और विशेषतः भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में परमेश्वर ने अपने लोगों को सिखाया कि एक मसीहा अन्ततः पाप के प्रभावों और उसकी उपस्थिति से उद्धार दिलाएगा।

उद्धार पर लूका के बल के अनुरूप हम लूका के सुसमाचार के मुख्य विषयों पर हमारी चर्चा को तीन भागों में विभाजित करेंगे जो मसीह के उद्धार देने वाले कार्य के तीन विभिन्न पहलुओं से संबंधित हैं। पहला, हम व्यक्तिगत उद्धार के लूका के वर्णन पर विचार करेंगे। दूसरा, हम उसके द्वारा हमारे उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर के चित्रण पर विचार करेंगे। और तीसरा, हम उद्धार पाने वाले लोगों के प्रकारों का सर्वेक्षण करेंगे। आइए हम लूका के उद्धार के वर्णन से आरम्भ करते हैं।

उद्धार का वर्णन

अपने पूरे सुसमाचार में लूका ने यह दिखाया है कि व्यक्तिगत उद्धार मुख्यतः लोगों की दशाओं को पलटने से संबंधित है। यह परमेश्वर के सामने उनके व्यक्तित्वों और स्थिति को बदलता है और उनकी नियति में परिवर्तन लाता जिससे श्रापित होने की बजाय वे आशीषित होते हैं।

हम सब पापियों के रूप में जन्मे हैं। और इसके फलस्वरूप हम परमेश्वर द्वारा दोषी ठहराए गए हैं और हम अनन्त विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। परन्तु सुसमाचार हमें पापों की क्षमा देता है ताकि फिर परमेश्वर के पास हमें दोषी ठहराने का कारण न रहे। लूका प्रायः इसे इस प्रकार बताता है कि उद्धार के फलस्वरूप हमारे और परमेश्वर के बीच में मेल होता है। और हमारे नए स्थान के साथ परमेश्वर के राज्य में हमें अनन्त आशीषें मिलती हैं जो हमें उस समय प्राप्त होंगी जब यीशु वापस आकर पृथ्वी को सिद्ध बनाएगा। उस नई पृथ्वी में बीमारी या मृत्यु या अपंगता या दर्द नहीं होगा। और इस समय हमारे जीवन चाहे जैसे भी हों परन्तु उस आने वाले संसार में हम धनी और सौभाग्यशाली होंगे।

> लूका के सुसमाचार के पाठक प्रायः यह ध्यान देते हैं कि यीशु अपने जीवन और सेवकाई के सामाजिक सन्दर्भ में प्रभावहीन लोगों के समूह पर विशेष ध्यान देता है जैसे स्त्रियाँ, गैरयहूदी, या बच्चे। मेरे विचार में इसके पीछे एक गहरा धर्मविज्ञानी कारण है और वह इस तथ्य से जुड़ा है कि लूका परमेश्वर के अन्त समय के शासन को निर्बलों को लाभ की स्थिति में लाने के अर्थों में समझता है। और इसका परिणाम ताकतवर लोगों की लाभहीनता है अर्थात् भूमिकाओं का परिवर्तन। अब यह भूमिकाओं को पलटने का तथ्य सुसमाचारों या नए नियम या अन्त के समय के विचार या युगान्त विज्ञान या "परमेश्वर का राज्य निकट है" जैसी वास्तविकता के लिए अद्वितीय नहीं है। आप इसे पूरे धर्मशास्त्रीय प्रकाशन में पाते हैं। उदाहरण के लिए, निःसन्देह उत्पत्ति की पुस्तक में हम यह बार-बार देखते हैं कि पहलौठों की बजाय दूसरे जन्मे पुत्रों को चुना जाता है। यह अपेक्षाओं का पलटना है। यह अपेक्षाओं के पलटने का केवल एक उदाहरण है जिसे आप पुराने नियम में देखते हैं और जहाँ तक लूका का सवाल है तो इसकी पूर्ति, इसका चरम, इसकी पूर्णता, यह नए नियम में अपेक्षाओं का पलटा जाना, जैसे मैं कहता हूँ, विशेषतः शक्तिशाली और शक्तिहीनों की भूमिका का पलटा जाना है।
>
> डॉ. डेविड बौएर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आपको याद होगा कि लूका अध्याय 7 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपने दूतों को यह पूछने के लिए यीशु के पास भेजा था कि क्या वास्तव में वही मसीहा है। और यीशु ने यशायाह 61:1-2 के द्वारा उत्तर दिया - वही परिच्छेद जिसे उसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में आराधनालय में पढ़ा था। लूका 7:22 में एक और बार यीशु के उत्तर को देखें :

> अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। (लूका 7:22)

यहाँ यीशु ने जो कुछ बताया वह उद्धार का एक स्वरूप था, बुरी दशाओं से अच्छी दशाओं की ओर एक परिवर्तन था।

नई पृथ्वी में ये बुरी दशाएँ पूरी तरह से दूर हो जाएँगी। और अब भी उद्धार हमें उन अनन्त आशिषों का पूर्व-स्वाद देता है। परन्तु उद्धार के बड़े परिवर्तन हमारी बाहरी परिस्थितियों तक सीमित नहीं हैं। वे हमें अन्दर से भी बदलते हैं। जैसे यीशु ने लूका 6:27-36 में कहा :

> अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो। जो तुम्हें श्राप दें, उन को आशीष दोः जो तुम्हारा अपमान करें, उन के लिए प्रार्थना करो... अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करोः और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिए बड़ा फल होगा; और तुम परमप्रधान की सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है। जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो। (लूका 6:27-36)

राज्य की आशीषें केवल बाहरी परिस्थितियों को ही नहीं बदलती हैं। वे उद्धार पाने वालों के चरित्र और दृष्टिकोणों को भी बदल देती हैं। बाहरी परिवर्तनों के समान ही ये आन्तरिक परिवर्तन भी आँशिक रूप से वर्तमान संसार में और पूरी तरह से अगले संसार में प्रकट होंगे। इस समय हम अलग तरह से सोचना और कार्य करना आरम्भ करते हैं क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है और हम नई आँखों से संसार को देखते हैं। ये परिवर्तन स्वर्ग में भी रहेंगे जहाँ हम पाप की उपस्थिति, भ्रष्टता, और उसके दुष्परिणामों से पूर्णतः मुक्त होंगे। और वे तब पूरे होंगे जब वह वापस लौटकर नई पृथ्वी पर हमें हमारे नए शरीर देगा।

उद्धार की ये आशीषें इस बात को समझाती हैं कि लूका के सुसमाचार में बार-बार उद्धार का उचित प्रत्युत्तर आनन्द क्यों है। एक तो इसे हम लूका द्वारा शामिल किए गए बहुत-से गीतों के द्वारा देखते हैं, जैसे लूका 1:68-79 में जकर्याह का गीत, लूका 1:46-55 में मरियम का गीत, और लूका 2:29-32 में शिमौन का गीत। उद्धार में आनन्द का वर्णन स्वर्गदूतों की घोषणाओं में भी किया गया है, जैसे लूका 1:14 में जकर्याह को दिया गया सन्देश और लूका 2:10-11 में चरवाहों को सुनाया गया बड़े आनन्द का सुसमाचार। और आनन्द लूका अध्याय 15 में खोई हुई भेड़, खोए हुए सिक्के, और खोए हुए पुत्र के यीशु के दृष्टान्तों में एक सतत् विषय है। यीशु ने लूका 6:21-23 में आनन्द के प्रत्युत्तर को संक्षेप में इस प्रकार बताया :

> धन्य हो तुम, जो अब रोते हो, क्योंकि हंसोगे... उस दिन आनन्दित होकर उछलना। (लूका 6:21-23)

परमेश्वर चाहता है कि उद्धार से हमें आनन्द मिले। वह चाहता है कि हम आनन्दित हों क्योंकि हमारे पाप धो दिए गए हैं और हमारा उसके साथ एक शान्तिपूर्ण संबंध है और उसके राज्य की आशीषों के वारिस हैं। यह विषय लूका के लिए इतना महत्वपूर्ण था कि उसने अपने सुसमाचार को इसके साथ समाप्त किया। लूका 24:52-53 देखें जहाँ उसने बताया कि यीशु के स्वर्गारोहरण के बाद चेलों ने क्या किया :

> वे... बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए। और लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे। (लूका 24:52-53)

> जब हम परमेश्वर को जैसा वह है, वैसा देखते हैं; जब हम चखकर देखते हैं कि यहोवा भला है तो इससे आनन्द होना चाहिए, इससे हर्ष होना चाहिए। यदि मैं अपनी पत्नी के लिए फूल लाकर कहूँ, "प्रिय, तुम्हारे लिए कुछ फूल हैं क्योंकि मुझ से तुम्हें यह देना मेरा कर्त्तव्य है," तो संभवतः इससे उसे ज्यादा खुशी नहीं होगी। इसे हर्ष और आनन्द से करने की आवश्यकता है क्योंकि वो मुझे पसन्द है। अतः परमेश्वर में हमारा हर्ष परमेश्वर को उस प्रकार से जानने की मूलभूत अभिव्यक्ति बन जाता है, जैसा वह है। और इसलिए परमेश्वर में हर्षित होना, परमेश्वर में आनन्दित होना, उसमें तृप्ति का अहसास मसीही जीवन का केन्द्रिय भाग है।

डॉ. के. एरिक थोनस

उद्धार के इस विवरण को ध्यान में रखते हुए आइए हम हमारे दूसरे मुख्य विषय को देखें- लूका का हमारे उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर पर बल।

उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर

हम हमारे उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर पर तीन चरणों में विचार करेंगे। हम देखेंगे कि उद्धार परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा, परमेश्वर की योजना के अनुसार और परमेश्वर के पुत्र के द्वारा आता है। आइए पहले हम इस तथ्य को देखें हैं कि उद्धार परमेश्वर की सामर्थ से आता है।

परमेश्वर की सामर्थ

लूका के सुसमाचार में नियमित रूप से पुराने नियम का यह विचार गूँजता है कि परमेश्वर अपने लोगों का उद्धारकर्ता है। उदाहरण के लिए, यह लूका के शुरूआती अध्यायों का एक प्रमुख विषय है जो उसकी सम्पूर्ण पुस्तक की लय निर्धारित करता है। लूका 1:47 में मरियम आनन्दित हुई क्योंकि परमेश्वर उसका उद्धारकर्ता था। लूका 1:68-79 में जकर्याह परमेश्वर द्वारा लाए जाने वाले उद्धार का गीत गाता है। और देखें लूका 2:29-30 में बालक यीशु को गोद में लेने पर शिमौन ने क्या कहा :

> हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है। क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है। (लूका 2:29-30)

शिमौन ने सारी सृष्टि पर ताकत और अधिकार को परमेश्वर से जोड़ते हुए उसे सर्वोच्च प्रभु - या यूनानी में डेस्पोटा - कहा। और "तेरे उद्धार" शब्द के द्वारा शिमौन ने संकेत दिया कि परमेश्वर उद्धार को लाने के लिए अपनी सामर्थ का प्रयोग कर रहा है।

और यही विषय लूका के सुसमाचार के शेष भाग में जारी रहता है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने लूका 3:6 में परमेश्वर द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी के सामर्थी नवीनीकरण के सन्दर्भ में उसके उद्धार की घोषणा की। और लूका 18:26-27 में यीशु ने सिखाया कि मनुष्यों के लिए उद्धार असंभव है परन्तु परमेश्वर के लिए सब संभव है।

लूका अपने पाठकों को यह समझाना चाहता था कि सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है। और इसलिए उद्धार को एक मनुष्य के बल, बुद्धि, निश्चय, या धन से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। उद्धार

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परमेश्वर का है। यह उसका कार्य है जो उसकी सामर्थ से होता है। केवल परमेश्वर में अपने लोगों को दण्ड से मुक्ति देने का अधिकार है। केवल परमेश्वर लोगों को भीतर से बदल सकता है। केवल परमेश्वर में उसके राज्य को पृथ्वी पर लाने की आवश्यक शक्ति है। और केवल परमेश्वर में अपने लोगों को उस राज्य की आशीषों का प्रतिफल देने की क्षमता है।

इस पर बल देने के अतिरिक्त कि उद्धार परमेश्वर की सामर्थ से मिलता है लूका ने सिखाया कि उद्धार परमेश्वर की योजना का हिस्सा है।

परमेश्वर की योजना

उदाहरण के लिए, लूका अध्याय 4 में अपनी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में यीशु ने यशायाह 61:1-2 से पढ़ा। और उसने यह दावा करके लोगों को चौंका दिया कि उस समय और स्थान में वह उस भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहा था। और अपने शेष सुसमाचार में लूका ने पुराने नियम में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के नाटकीय रूप से यीशु में पूरे होने के बारे में दिखाते हुए यह प्रदर्शित करना जारी रखा कि उद्धार परमेश्वर की योजना है। लूका 24:44 में अपनी सेवकाई के अन्तिम समय के निकट यीशु के वचनों को सुनें :

> अवश्य है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों। (लूका 24:44)

सम्पूर्ण पुराना नियम उस उद्धार के बारे में बात करता है जिसे परमेश्वर ने यीशु के द्वारा पूरा किया है। अपने लोगों को इस प्रकार से उद्धार देना हमेशा से परमेश्वर की योजना रही है।

लूका ने नियमित रूप से यह संकेत दिया कि यीशु जिन कार्यों को करता था वे आवश्यक थे क्योंकि परमेश्वर ने उनकी माँग रखी थी या उनका होना नियुक्त किया था और उसके द्वारा भी यह दिखाया कि उद्धार परमेश्वर की योजना को पूरा करता है। एक उदाहरण के रूप में, लूका 9:22 में यीशु द्वारा अपनी पीड़ा और मृत्यु के वर्णन के तरीके को देखें :

> मनुष्य के पुत्र के लिए अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे। (लूका 9:22)

ध्यान दें कि होने जा रही बात को समझाते समय यीशु ने "अवश्य" शब्द का प्रयोग किया जिसका यूनानी शब्द डेई है, अर्थात् "यह आवश्यक है।" यह आवश्यक क्यों था? क्योंकि यह परमेश्वर की माँग थी। यीशु के साथ जो कुछ हुआ वह अपने लोगों को उद्धार देने की परमेश्वर की प्राचीन योजना का हिस्सा था।

परमेश्वर को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में दिखाने के लिए जिस तीसरे बिन्दू का हम वर्णन करेंगे वह यह है कि उद्धार परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के द्वारा आता है।

परमेश्वर का पुत्र

लूका का सुसमाचार बार-बार यह पुष्टि करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। कई बार यीशु का पुत्रत्व देहधारी परमेश्वर के रूप में उसकी पहचान करता है, जैसे लूका 1:32-35 में स्वर्गदूत द्वारा उसके जन्म की घोषणा में है। अन्य समयों पर यह उसके अधिकार पर बल देता है। इसे हम लूका 3:22 में उसके बपतिस्मा पर देखते हैं जहाँ परमेश्वर ने स्वर्ग से पुष्टि की और लूका 9:35 में जहाँ परमेश्वर ने लोगों को अपने पुत्र की सुनने का निर्देश दिया। अन्य समयों पर यह परमेश्वर के मसीहारुपी वासल राजा के रूप में उसकी भूमिका पर बल देता है जैसा लूका 22:29 में अन्तिम भोज के दौरान है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परन्तु परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु के इन सारे उल्लेखों में एक बात समान है : ये सारी बातें यह संकेत देती हैं कि यीशु ही वह है जिसके द्वारा परमेश्वर उद्धार के कार्य को पूरा कर रहा है। यीशु परमेश्वर का पुत्र है जिसे लोगों के बदले में मरने और परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाने के द्वारा अपने लोगों को दण्ड से बचाने के लिए संसार में भेजा गया है।

कई बार मसीही लोग इस गलतफहमी में होते हैं कि पिता एक क्रोधी परमेश्वर है जो हम से घृणा करता है और यीशु उसका विद्रोही पुत्र है जो हमारा साथ देने के लिए आया। परन्तु यह सत्य से बहुत दूर है। यीशु हमें बचाने के लिए केवल इसलिए आया क्योंकि पिता ने उसे भेजा था। हाँ, यीशु वास्तव में हमारा उद्धारकर्ता है। और वह वास्तव में हमें पिता के दण्ड से बचाता है। परन्तु यह समझना निर्णायक है कि जिस उद्धार को वह लाया है उसका उद्भव पिता से है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु वही करता है जो पिता कहता है। परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिए वह परमेश्वर की सामर्थ का प्रयोग करता है। और इस प्रकार यीशु का उद्धार का कार्य इसका प्रमाण है कि पिता परमेश्वर ही हमारा परम उद्धारकर्ता है।

लूका के उद्धार के वर्णन और हमारे उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर को देखने के बाद आइए हम लूका के सुसमाचार के तीसरे मुख्य विषय को देखते हैं : उद्धार पाए हुए लोग।

उद्धार पाने वाले लोग

यीशु के समय में कोई भी आश्चर्यचकित नहीं होता यदि वह उन लोगों को उद्धार देता जिनका समाज में सम्मान और अधिकार था। कोई भी यह सोचकर चकित नहीं होता कि उसने परमेश्वर की व्यवस्था को सख्ती से अक्षरशः पूरा करने वालों को उद्धार क्यों दिया। और कोई भी व्यक्ति चकित नहीं होता यदि वह उन लोगों को दोषी ठहराता जो पहले ही यहूदी समाज द्वारा त्यागे हुए थे जिन्हें अपने जीवन की किन्हीं कमियों के कारण परमेश्वर की आशीषें नहीं मिली थी। परन्तु यीशु ने ऐसा नहीं किया। और लूका के सुसमाचार का एक मुख्य विषय यीशु द्वारा उद्धार दिए गए आश्चर्यचकित लोगों की ओर एवं यीशु द्वारा उन्हें दिए गए आश्चर्यजनक आदर तथा प्रतिष्ठा की ओर ध्यान खींचना है।

> लूका के विवरण में ध्यान देने योग्य एक बात यह है कि वह सबसे छोटे, अन्तिम, और खोए हुए में रूचि रखता है और वास्तव में उसका एक प्रमुख विषय परिवर्तन है। सबसे छोटे, अन्तिम और खोए हुए लोग प्रथम और महत्वपूर्ण बनेंगे और वे परमेश्वर के राज्य में रहेंगे। लूका वास्तव में सुसमाचार के नैतिक पक्ष में रूचि रखता है। उसकी रूचि उस बात में है जो यीशु की सेवकाई में विशेष है ओर जिसे प्रशंसनीय या गुणी मान जाएगा और इसीलिए हम लूका और प्रेरितों के काम दोनों में कंगालों, स्त्रियों, रोगियों और बुजुर्गों के प्रति एक चिन्ता को देखते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि लूका/प्रेरितों के काम में इन बातों पर अन्य किसी भी सुसमाचार से अधिक बल दिया गया है। मेरा मतलब है जब हम यीशु के धन्य वचनों को देखते हैं तो मत्ती के “धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं,” की बजाय लूका में केवल इतना है, “धन्य हैं वे जो दीन हैं।” और यही लूका की वास्तविक चिन्ता है। उसे इसकी चिन्ता है क्योंकि उसका विश्वास है कि यीशु के द्वारा केवल छुटकारा ही नहीं परन्तु न्याय भी आता है। समाज की और पाप में गिरी मानवता की गलतियों में यीशु द्वारा सुधार लाया जाता है और वह वास्तव में यह बल देना चाहता है कि यीशु संसार का उद्धारकर्ता है। वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए उद्धारकर्ता है। चाहे आप समाज के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक हैं या सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति हैं या समाज के छोटे से छोटे व्यक्ति हैं; यीशु प्रत्येक व्यक्ति के लिए है और लूका उस पर बल देना चाहता है।

डॉ. बेन विदरिंगटन

इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम केवल चार चौंकाने वाले प्रकार के लोगों को देखेंगे जिनकी ओर लूका बार-बार ध्यान खींचता है, हम गैरयहूदियों से आरम्भ करेंगे।

पुराना नियम अन्ततः गैरयहूदियों को परमेश्वर के राज्य में लाए जाने और उसकी आशीषों के भागी होने के बारे में बताता है। परन्तु उन दिनों में यहूदी गैरयहूदियों को तुच्छ मानते थे और उन्हें परमेश्वर के राज्य की प्राथमिक आशिषों से बहिष्कृत मानते थे।

लूका द्वारा इस सुसमाचार को लिखने के समय तक संसारभर में मसीही कलीसिया में मुख्यतः गैरयहूदियों से आए हुए विश्वासी थे। इतिहास के द्वारा परमेश्वर ने आश्चर्यजनक रीति में गैरयहूदियों को आशीष देने के अपने इरादे को स्पष्टतः प्रकट कर दिया था। और जैसे हमने पहले देखा, लूका द्वारा इसे लिखने का एक कारण गैरयहूदियों को यह भरोसा दिलाना था कि उन्होंने मसीही बनने के द्वारा कोई गलती नहीं की है। इसलिए अपने पूरे सुसमाचार में वह उन स्थानों की ओर ध्यान खींचता है जहाँ पुराने नियम की आशाओं और आदर्शों की पूर्णता में गैरयहूदियों को उद्धार दिया गया था।

उदाहरण के लिए, लूका 2:10-14 में स्वर्गदूतों ने घोषणा की कि सुसमाचार का आनन्द पृथ्वी के सब लोगों के लिए होगा। यह कहने की बजाय कि यहूदियों को उद्धार देने के लिए इस्राएल का नया राजा जन्मा है, स्वर्गदूतों ने वैश्विक अर्थों में सन्देश दिया। और लूका 2:32 में शिमौन ने घोषणा की कि बालक यीशु "गैरयहूदियों के लिए प्रकाशन की ज्योति" होगा। जब सारे सुसमाचार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की कहानी में यशायाह 40 का उल्लेख करते हैं तो केवल लूका 3:6 उद्धरण को बढ़ाते हुए इन वचनों को शामिल करता है, "सारी मानवजाति परमेश्वर के उद्धार को देखेगी।"

लूका ने यह भी दिखाया कि जिन सामरियों को यहूदी अपना शत्रु मानते थे उन्हें भी उद्धार मिल सकता था। उदाहरण के लिए, लूका 17:11-19 में यीशु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया परन्तु केवल एक सामरी ने ही वापस लौटकर उसे धन्यवाद दिया। और केवल लूका ने ही लूका 10:30-37 में पाए जाने वाले अच्छे सामरी के दृष्टान्त को शामिल किया है जिसमें सामरी पड़ोसी के प्रति प्रेम का एक उदाहरण था।

इसके अतिरिक्त, लूका ने उन समयों के बारे में भी बताया जब गैरयहूदियों ने उद्धारकर्ता के रूप में यीशु पर वास्तविक विश्वास का प्रदर्शन किया। उदाहरण के लिए, लूका 7:9 में यीशु ने एक रोमी सूबेदार के बारे में कहा :

> मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया। (लूका 7:9)

और जैसे हमने इस अध्याय में पहले देखा है, लूका ने यीशु की वंशावली को आदम तक बताने के द्वारा यह संकेत दिया कि यीशु यहूदियों और गैरयहूदियों सहित आदम के पूरे वंश को उद्धार देने के लिए आया था।

दूसरे चौंकाने वाले प्रकार के लोग जिन्होंने लूका के सुसमाचार में उद्धार पाया, वे पापी थे। अब, एक महत्वपूर्ण अर्थ में सारे मनुष्य पापी हैं। परन्तु यीशु के दिनों में कुछ ऐसे लोग थे जिनके पाप इतने बड़े और इतने सार्वजनिक थे कि इन लोगों को यहूदी समाज ने अलग-थलग कर दिया था, जैसे कि लूका 7:36-50 की व्यभिचारिणी स्त्री और लूका 19:1-9 में चुंगी लेने वाला जक्कई। चुंगी लेने वाले इसलिए पापी थे क्योंकि वे अपने देश के निवासियों से सरकार द्वारा निर्धारित दर से अधिक चुंगी लेकर आय अर्जित करते थे। परन्तु यीशु उन्हें भी उद्धार देने के लिए आया था। वह विश्वास के साथ मन फिराने वाले किसी भी व्यक्ति को उद्धार देने के लिए तैयार था।

एक उदाहरण के रूप में लूका 5:29-32 की इस कहानी को देखें :

> और लेवी ने अपने घर में उसके लिए बड़ी जेवनार की; और चुंगी लेने वालों की और औरों की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे, एक बड़ी भीड़ थी। और फरीसी और उन के शास्त्री उस के चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, कि तुम चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो? यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि वैद्य भले चंगों के लिए नहीं, परन्तु बीमारों के लिए अवश्य है। मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने आया हूँ। (लूका 5:29-32)

लूका के सुसमाचार में उद्धार पाने वाला तीसरा चौंकाने वाला समूह है स्त्रियाँ। प्राचीन मध्य-पूर्वी संसार में जहाँ यीशु रहता था वहाँ महिलाओं को समाज में अधिक अधिकार नहीं थे और उन्हें अधिक महत्व नहीं दिया जाता था। परन्तु लूका ने इस बात की ओर ध्यान खींचा कि यीशु ने उन्हें उद्धार दिया है। लूका 8:41-53 में यीशु ने याईर की बेटी और बारह वर्षों से रक्तस्राव की बीमारी से ग्रस्त महिला को चंगाई दी। उसने विधवाओं के प्रति भी तरस दिखाया जिनके लिए प्राचीन पुरूष प्रधान समाज में न तो कोई सहायता थी और न ही कोई आशा। लूका 7:11-17 और 18:1-8 इन सर्वाधिक जरूरतमन्द लोगों के प्रति यीशु की परवाह और देखभाल को दिखाते हैं।

स्त्रियों के उद्धार पर प्रकाश डालने वाली लूका की सिखाने की एक सर्वाधिक नाटकीय तकनीक दीन महिलाओं की तुलना घमण्डी पुरूष धार्मिक अगुवों से करती है। उदाहरण के लिए, लूका 13:14-15 में यीशु ने आराधनालय के सरदार को एक कपटी कहा, जबकि उसी सन्दर्भ में एक कुबड़ी स्त्री को "अब्राहम की बेटी" कहा। ऐसी ही तुलना हम लूका 7:37-50 में देखते हैं जहाँ यीशु ने एक पापी स्त्री के प्रेम को स्वीकार किया, जबकि घमण्डी फरीसी शमौन को दोषी ठहराया।

और प्रेम के सर्वोच्च उदाहरण के रूप में लूका ने मरियम की कहानी बताई। लूका 10:27 में यीशु ने परमेश्वर और पड़ोसी से प्रेम करने की दो महान आज्ञाओं के बारे में सिखाया। फिर पद 38-42 में मरियम ने दिखाया कि परमेश्वर से प्रेम करना क्या है; आज्ञापालन में उसकी शिक्षाओं को सुनना। न पतरस, न यूहन्ना और न ही यहूदी नेतृत्व परन्तु एक स्त्री धार्मिक भक्ति का उदाहरण बनती है।

अन्ततः, लूका के सुसमाचार में उद्धार पाकर चौंकाने वाला चौथा समूह कंगालों का है। लूका ने अपने सुसमाचार की शुरूआत यह संकेत देने के द्वारा की थी कि मरियम और युसुफ का परिवार निर्धन था। इसे हम लूका 2:24 से जानते हैं क्योंकि वे लैव्यवस्था 12:8 में निर्धनों के लिए बताई गई भेंट को मन्दिर में लाए थे।

लूका ने यह भी दिखाया कि यीशु ने लूका 12:13-21 में धनवान मूर्ख के दृष्टान्त और लूका 16:19-31 में धनवान व्यक्ति और लाजर की कहानी में निर्धनों का पक्ष लिया। और पुनः लूका 4:18 को देखें जहाँ यीशु ने यशायाह 61:1 से पढ़ा :

> प्रभु का आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। (लूका 4:18)

केवल लूका ही ऐसा सुसमाचार लेखक था जिसने इस घटना की जानकारी दी थी। और उसने यीशु की सम्पूर्ण सेवकाई में एक आदर्श के रूप में इसे शामिल किया। उसका बिन्दू यह था कि परमेश्वर के राज्य को लाने का एक हिस्सा कंगालों को सुसमाचार सुनाना था। लूका ने यह संकेत देने का विशेष ध्यान रखा कि ब्रह्मांड के परमेश्वर ने उन लोगों को भी उद्धार देने के लिए देहधारण किया था जिन्हें समाज घृणित मानता था। गैरयहूदियों, पापियों, स्त्रियों और कंगालों के पास यहूदी समाज में बहुत कम अधिकार थे, और उनसे परमेश्वर के राज्य की महानतम आशिषों को प्राप्त करना अपेक्षित नहीं था। परन्तु यीशु ने उस पद्धति को अस्वीकार कर दिया। उसने उस प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण स्वीकृति और असीम आशिषें दी जिसने उसे उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार किया।

सारे सुसमाचार लेखकों में लूका अपने समय के फिलिस्तीनी समाज के उपेक्षित समूहों पर विशेष बल देता है। हम निरन्तर उसे पुरूषों के विवरणों को स्त्रियों के विवरणों के साथ जोड़ते हुए देखते हैं। हम उसे सामरियों और कंगालों पर भी विशेष ध्यान देते हुए देखते हैं। उदाहरण के लिए हम लाजर और धनवान के इस दृष्टान्त को देखते हैं जो केवल लूका में पाया जाता है और जो इस बात का संकेत देता है। और फिर हम केवल लूका में ही अच्छे सामरी के दृष्टान्त को देखते हैं। अतः यीशु के उपदेश के ये विवरण नासरत में उसके प्रचार के अनुरूप हैं। वहाँ लिखा है कि मैं आया हूँ, आज पवित्रशास्त्र पूरा हुआ है; कंगालों, बन्धुओं और कुचले हुए लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिए आत्मा मुझ पर है। और यीशु अपने चेलों से कहता है कि जब भी वे भोज दें तो लंगड़ों और कंगालों को भी न्यौता दें। यीशु दूसरों के साथ हमारे संबंध के बारे में अत्यधिक महत्वपूर्ण बात कह रहा है, जैसे पौलुस कहता है कि हम अपने आप को जैसे हैं, उससे बेहतर न समझें। परन्तु हमें यह देखना चाहिए कि यीशु अपने अनुग्रह में समाज के प्रत्येक पहलू तक पहुँचा। उसने अपने चेलों को ऐसा करने के लिए कहा। और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। वेश्याओं और पापियों के साथ समय व्यतीत करने के कारण यीशु का अपमान किया जाता है और इसके जवाब में वह कहता है, मैं धर्मियों के लिए नहीं परन्तु पापियों के लिए आया हूँ। अतः परमेश्वर के लोगों के प्रत्येक पहलू तक पहुँचना केवल यीशु के मिशन का प्रतिबिम्ब ही नहीं है परन्तु यह इस अर्थ में भी है कि वास्तव में हम कौन हैं, और हमारी आवश्यकता क्या है। हम सबको परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है, हम अपने अच्छे कार्यों या समाज में हमारे स्थान के आधार पर परमेश्वर का अनुग्रह नहीं पा सकते और इसलिए परमेश्वर के सामने हम सब बराबर हैं और हमें एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए और एक-दूसरे तक पहुँचना चाहिए क्योंकि हम सबकी आवश्यकता एक ही प्रकार की है।

डॉ. ग्रेग पैरी

उपसंहार

इस अध्याय में हमने लेखक, मूल पाठकों, लिखने के अवसर; संरचना एवं विषय-सूची; और उद्धार पर आधारित मुख्य विषयों के संबंध में लूका के सुसमाचार की पृष्ठभूमि पर विचार किया। यदि लूका के सुसमाचार को पढ़ते समय हम इन विचारों का ध्यान रखते हैं तो हमें उसके अर्थ की एक बेहतर समझ प्राप्त होगी और हम कलीसिया और संसार में हमारे स्वयं के जीवनों में उसे बेहतर रूप से लागू कर सकेंगे।

लूका का सुसमाचार यीशु को परमेश्वर के तेजोमय पुत्र के रूप में प्रकट करता है जो संसार के प्रेमी उद्धारकर्ता के रूप में पृथ्वी पर आया। वह जाति, धन या प्रतिष्ठा पर ध्यान दिए बिना प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के उद्धार का सुसमाचार देता है। अपने समय में लूका के सुसमाचार ने गैरयहूदी मसीहियों को यह भरोसा दिलाया कि उन्होंने एक यहूदी मसीहा के पीछे चलकर कोई गलती नहीं की थी। और यही बात प्रत्येक युग में सत्य है। पहली सदी से कलीसिया का बहुसंख्यक भाग गैरयहूदियों का रहा है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम मन फिराव और विश्वास के उसी सुसमाचार का संसार के प्रत्येक व्यक्ति के समक्ष यह जानते हुए प्रचार करते रहें कि केवल हमारे पास ही वह सन्देश है जो सच्चा उद्धार ला सकता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।